प्रथम अध्याय

हिन्दी उपन्यास

अवधारणा : मानव सभ्यता के उदय के साथ ही कथा–आख्यानों की परम्परा भी विकसित हुई। इसमें निरन्तर विकास होता रहा। प्रारम्भ में गद्य का विकास न होने के कारण काव्य ही मुख्य भाषा के रूप में थी। कालान्तर में हिन्दी साहित्य में गद्य के प्रादुर्भाव के साथ ही कुछ नूतन विधाओं का जन्म हुआ। इन्हीं नवीन विधाओं में एक विधा उपन्यास भी है, जो आज हिन्दी साहित्य की लोकप्रिय विधा है। "गद्य का प्रादुर्भाव नवीन परिस्थितियों से उत्पन्न साहित्य के उत्तरदायित्व को वहन करने में सर्वथा योग्य और उपयोगी सिद्ध हुआ, नवीन विचारधारा के साथ–साथ साहित्य के क्षेत्र में भी नवीन विधाओं का जन्म हुआ, जिसमें उपन्यास की विधा अत्यन्त विशिष्ट है।"[1]

प्रारम्भ में हिन्दी साहित्य में उपन्यास का अभाव था। इस अभाव का मुख्य कारण तत्कालीन लेखकों का उपन्यास के प्रति उपेक्षा का भाव था। उस समय उपन्यास को केवल मनोरंजन मात्र के लिए उपयुक्त साधन समझा जाता था। इसको उच्च साहित्य की श्रेणी में भी नहीं रखा जाता था। संस्कृत साहित्य में उत्कृष्ट साहित्य के लिए विद्वानों ने जो नियम और आदर्श बताये थे, वे उच्चकोटि के थे। उपन्यास के पाठक को भी हेय दृष्टि से देखा जाता था। इन्हीं सब कारणों से प्रारम्भ में उपन्यास साहित्य उपेक्षित रहा।

आधुनिक समय में उपन्यास, हिन्दी साहित्य की एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण विधा है। अपने प्रारम्भिक काल से ही जिस उपेक्षा का भाव उपन्यास लिए हुए था, आज उसका लेशमात्र प्रभाव भी उपन्यास में नहीं दिखाई देता है। आज यह विधा हिन्दी साहित्य की सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली विधा है। आज

---

1. 'हिन्दी उपन्यासों में खलपात्र' : डॉ. सरोज अग्रवाल, पृष्ठ– 35

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

यह केवल मनोरंजन का साधन न होकर मानव जीवन का ऐसा गद्य है, जिसमें मनुष्य को पूर्णता से समझने और अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जाता है।"[1]

साहित्य की अन्य विधाओं से उपन्यास सर्वथा भिन्न विधा है। क्योंकि उपन्यास में मनुष्य के वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन की विभिन्न समस्याओं, संघर्षों, द्वन्द्वों एवं अन्य परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण मिलता है। "उपन्यास में बहुमुखी मानवीय समस्याओं का चित्रण होता है।"[2] महाकाव्य और नाटकों से भी उपन्यास भिन्न है। "यद्यपि उपन्यास साहित्य का मूल महाकाव्य और नाटक आदि विधाओं में सन्निहित है, परन्तु उपन्यास उनसे कुछ भिन्न पाठकों के लिए रचा गया है। उपन्यास का पाठक उपन्यास द्वारा नितांत एकाकी रहकर अपना मनोरंजन कर सकता है, जबकि महाकाव्य एवं नाटक के लिए श्रोता और दर्शक दोनों आवश्यक हैं।"[3]

संस्कृत साहित्य और उपन्यास : संस्कृत साहित्य में विभिन्न अर्थों में उपन्यास शब्द का प्रयोग होता आया है। ऐतिहासिक दृष्टिकोंण से सर्वप्रथम उपन्यास शब्द का प्रयोग भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ 'नाट्य शास्त्र' में नाट्य विश्लेषण के सन्दर्भ में पताका स्थानक के चतुर्थ भेद और प्रतिमुख सन्धि के अंग विशेष के रूप में किया है।"[4] संस्कृत के कुछ अन्य ग्रन्थों में उपन्यास शब्द का प्रयोग उदाहरण, कथन, सन्दर्भ आदि अनेक अर्थों में किया गया है। इन ग्रन्थों में 'महाभाष्य', 'अमरूक', 'याज्ञवल्क्यस्मृति', 'किरातार्जुनीय', 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्', 'साहित्य दर्पण', 'अमरकोष' आदि हैं।

यद्यपि उपन्यास शब्द संस्कृत साहित्य में विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता आया है, लेकिन वर्तमान उपन्यास उससे कुछ भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होता है। डॉ.

---

1 " It is the prose of man's life, the first art to attempt to take the whole man and give him expression." 'The Novel and the People': Ralph Fox. Page - 20

2 'उपन्यास शिल्प और प्रवृत्तियाँ' : डॉ. सुरेश सिनहा, पृष्ठ – 9

3 'हिन्दी उपन्यास का प्रारम्भिक विकास' : डॉ. कु0 शैलबाला, पृष्ठ– 9

4 'वही' पृष्ठ– 10

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

शिवकुमार यादव ने इस सम्बन्ध में लिखा है– "उपन्यास लम्बी अवधि तक अंग्रेजों की पराधीनता में रहने के कारण हमारी बदलती हुई परिस्थितियों के प्रतिक्रिया स्वरूप अस्तित्व में आयी विधा है, इसे संस्कृत साहित्य सें जोड़ना निर्मूल ही नहीं भ्रामक भी है।"[1]

हिन्दी साहित्य में उपन्यास : हिन्दी के पूर्ववर्ती कथा साहित्य के अन्तर्गत 'पंचतंत्र', 'हितोपदेश', 'वेतालपंचविशति', 'कथा सरित सागर', 'वृहत कथा', 'कादम्बरी', 'दशकुमारचरित' आदि रचनाएँ मिलती हैं। डॉ. सत्येन्द्र 'दशकुमारचरित' व 'कादम्बरी' को उपन्यासों की श्रेणी में रखते हैं। उन्होंने इन रचनाओं को हिन्दी के विकास से जोड़ते हुए कहा है– "संस्कृत में साहित्यिक कहानियाँ हैं, जिनमें वस्तुतः उपन्यास की परम्परा छिपी है। 'दशकुमारचरित', 'कादम्बरी' आदि प्राचीन उपन्यास हैं। उपन्यास का आधुनिक ढांचा योरूप से अवश्य आया। परन्तु मूल रूप से भारत में 'कादम्बरी', 'दशकुमारचरित' जैसे उपन्यासों को पहले ही जन्म दिया है।"[2]

'कादम्बरी' और 'दशकुमारचरित' का यदि उपन्यास के साथ मूल्यांकन किया जाय तो ये कहीं भी नहीं ठहरती हैं, क्योंकि उपन्यास का सम्बन्ध मानव जीवन के चित्रण से है, जबकि 'कादम्बरी' और 'दशकुमारचरित' में इस लक्षण का अभाव है। उनका लक्ष्य केवल मनोरंजन करना है। 'दशकुमारचरित' गद्य–काव्य की श्रेणी में आता है। इन दोनों में उपन्यासिक तत्वों का भी अभाव है। इसलिए इनकों उपन्यास की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है।

हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास : हिन्दी उपन्यास के प्रारम्भ में विभिन्न भाषाओं के उपन्यास अनुवाद रूप में प्रकाश में आये। सर्वप्रथम बंगला, मराठी और अंग्रेजी के उपन्यासों का अनुवाद हुआ। इसके पश्चात् धीरे–धीरे मौलिक उपन्यास भी सामने आने लगे।

---

1 'प्रेमचन्द के उपन्यासों में युगचेतना का अनुशीलन' : डॉ. शिवकुमार यादव, पृष्ठ – 30

2 'डॉ. सत्येन्द्र समीक्षा के सिद्वान्त' : मेहरचन्द्र मुंशीराम, पृष्ठ – 151

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

हिन्दी के पहले मौलिक उपन्यास के सम्बन्ध में विद्वान एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वान श्री निवास द्वारा रचित 'परीक्षागुरू' को हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं, इसकी रचना 1882 ई0 में हुई, लेकिन कुछ विद्वान श्रद्धाराम फिल्लौरी की 'भाग्यवती' को हिन्दी का पहला उपन्यास मानते हैं इसकी रचना 1877 में हुई थी। "'भाग्यवती' में कथा है और उपन्यास का कुछ तत्व भी विद्यमान है, परन्तु इसे पूर्णतः उपन्यास कहना ठीक न होगा। इसकी तुलना में 'परीक्षागुरू' में उपन्यास की प्रवृत्ति अधिक विद्यमान है। यह उपन्यास हिन्दी का प्रथम उपन्यास होने का सफल दावा करती है।"[1] वस्तु–शिल्प को ध्यान में रखते हुए 'परीक्षागुरू' को हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास कहा जा सकता है। "'परीक्षागुरू' का जो उल्लेख मिलता है वह उसके द्वितीय संस्करण का है, उसका प्रथम संस्करण प्राप्त नहीं है। अनुमान है कि प्रथम संस्करण 10 साल पहले लिखित और प्रकाशित हुए होंगे। दूसरी बात इसकी टेकनीक आधुनिक उपन्यासों के समीप है, अतः यही प्रथम उपन्यास है।"[2] साहित्य जगत में उपन्यास का प्रादुर्भाव भारतेन्दु के उदय के साथ ही अठारहवी शताब्दी में हुआ। हिन्दी उपन्यास के विकास को भारतीय प्राचीन कथा परम्परा से जोड़ा जाता है। विद्वानों का मत है कि प्राचीन कथा–आख्यानों में निरन्तर परिवर्तन के फलस्वरूप हिन्दी साहित्य में उपन्यास का प्रादुर्भाव हुआ, लेकिन उपन्यास शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग बंगाल में माना जाता है। अंग्रेजों के आगमन एवं अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के बाद उपन्यासों के अनुवाद प्रारम्भ हो गये, उसी क्रम में धीरे–धीरे मौलिक उपन्यासों का लेखन शुरू हुआ।

हिन्दी उपन्यास को प्राचीन कथा–परम्पराओं से इसलिए भी नहीं जोड़ा जा सकता क्योंकि प्राचीन कथा साहित्य पद्य में रचित है। वे प्रेम प्रधान और उपदेशप्रधान हैं, जबकि आुधनिक उपन्यास मनुष्य के वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में घटित घटनाओं का यथार्थ चित्रण उपस्थित करता है। "आधुनिक

1 'हिन्दी उपन्यास यात्रा गाथा' : प्रो. शशिभूषण सिंघल, पृष्ठ – 40

2 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव व विकास', डॉ. बेचन, पृष्ठ – 50

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

हिन्दी उपन्यास गद्य में लिखित, वैयक्तिक दृष्टिकोण, विश्वसनीयता, स्वाभाविकता तथा यथार्थपरक स्थितियों पर बल देता है, जो निश्चित रूप से पश्चिमी शिक्षा के सम्पर्क का परिणाम है।"[1]

उपन्यास : अर्थ और परिभाषा : उपन्यास शब्द संस्कृत की अस् धातु से बना है, जिसका अर्थ होता है– रखना। इसमें 'उप' और 'नि' उपसर्ग तथा छत्र प्रत्यय का प्रयोग होता है। विद्वानों ने उपन्यास के अनेक अर्थ बतलायें हैं। सर मोनियर विलियम्स ने अपने संस्कृत–अंग्रेजी शब्दकोष में उपन्यास के अनेक अर्थ दिये हैं; जैसे : उल्लेख (मेनसन), अभिकथन (स्टेटमैंट), सम्पति (सजेशन), उद्धरण (कोटेशन), सन्दर्भ (रेफरैंश) इत्यादि। डॉ. मेक्डोनल ने भी अपने शब्दकोष में विज्ञप्ति (इन्टीमेशन), अभिकथन (स्टेटमैंट), उद्घोषण (डिकलेरेशन), वाद–विवाद (डिसकसन) आदि अनेक अर्थ उपन्यास शब्द के दिये हैं।"[2]

मराठी में उपन्यास के लिए 'कादम्बरी' शब्द प्रयुक्त होता है। "इसका कारण यह रहा होगा कि संस्कृत का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कादम्बरी' पश्चिम के नाविल से मिलती–जुलती रचना है। इसलिए मराठी में प्रारम्भ में उपन्यासों के लिए 'कादम्बरी' शब्द का प्रयोग होता होगा और धीरे–धीरे यह शब्द उपन्यास के अर्थ में रूढ़ हो गया।"[3]

गुजराती में उपन्यास के लिए नवल–कथा का प्रयोग होता है। नवल शब्द की उत्पति नावेल से हुई है और उसमें कथा शब्द जोड़कर नवलकथा रूप बना है। "उपन्यास वस्तुतः ही नवल अर्थात नया और ताजा साहित्यांग है, परन्तु फिर भी जिस मेधावी ने कथा, आख्यायिका आदि शब्दों को छोड़कर अंग्रेजी नावेल का प्रतिशब्द उपन्यास माना था, उसकी सूझ की प्रशंसा किये बिना नहीं

---

1 'हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष' : पृष्ठ – 9

2 'जैनेन्द्र और उनके उपन्यास' : पृष्ठ – 3

3 'हिन्दी साहित्य कोष : पृष्ठ – 140

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

रहा जाता। जहाँ उसने इस नये शब्द के प्रयोग से यह सूचित किया कि यह साहित्यांग पुरानी कथाओं और आख्यिकाओं से भिन्न जाति का है वहीं इसके शब्दार्थ द्वारा (उप– निकट, न्यास–रखना) यह भी सूचित किया कि विशेष साहित्यांश द्वारा ग्रन्थकार पाठक के निकट अपने मन की कोई विशेष बात, कोई अभिमत रखना चाहता है।"[1] उपन्यास के व्यापक स्वरूप और निरन्तर प्रगतिशील विधा होने के कारण उपन्यास की एक तर्कसंगत परिभाषा देना बहुत कठिन है। समय–समय पर विद्वानों ने इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। उपन्यास के विस्तृत कलेवर को देखते हुए ये परिभाषाएं उपन्यास के सभी पहलुओं को स्पष्ट करने में असमर्थ हैं। लेकिन उपन्यास के स्वरूप को जानने के लिए इन परिभाषाओं को समझना आवश्यक है।

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार : उपन्यास में लेखक अपने विचारों को क्रमबद्ध ढंग से व्यक्त करता है। "उपन्यास मानव जीवन और भावनाओं का गद्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया अनुवाद मात्र है। इस गद्य अनुवाद को पाठकों का ज्ञान बढ़ाने में सहायक होना चाहिए।"[2] आक्सफोर्ड शब्दकोष के अनुसार : "उपन्यास वर्णनात्मक काल्पनिक गद्य कथा है, जिसकी यथेष्ट लम्बाई है (जो एक या उससे अधिक खण्ड में समा जाय) और उसके चरित्र और कार्य यथार्थ जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं और वे एक से अधिक या कम जटिल वस्तु में गुँथे होते हैं।"[3] उपन्यास लिखित ग्रन्थ का एक रूप है, जिसमें पाठक लेखक के विश्व में भ्रमण करता है। यह नया है क्योंकि यह लेखक द्वारा तैयार किया

---

1 'साहित्य सन्देश' : डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ – 42

2 'They (Novels) are prose tern of ideas into language of human life being lived the translation must be made with such are occurary as to increase the reader knowledge of his our self.' : 'What is a Novel and What is it good far' : Ira Bolfart, Newark, 1950, page- 8

3 "A fiction prose narrative or tale of considerable length (now usually as long as to fill one or more volume), in which characters & action are representative of the real life of part & present times, are portrayed in the plot in more of less complexity." : 'The Oxford English Dictionary' (1961), volume-7 page 242

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

गया है।"[1]

हरबर्ट जे. मूलर उपन्यास को मनुष्य के अनुभवों को व्यक्त करने का साधन मानते हैं। "उपन्यास मूलतः चाहे वह यथार्थ हो अथवा आदर्श और इस प्रकार उपन्यास में अनिवार्यतः जीवन की आलोचना रहती है।"[2]

उपन्यास में कल्पना के सहारे सत्यता प्रकट करने का प्रयास किया जाता है। "उपन्यासकार कल्पना के सहारे एक नई दुनिया का निर्माण करता है जो भ्रम पैदा करती है।"[3] उपन्यास यथार्थ जीवन को कल्पना के सहारे प्रदर्शित करता है। लेखक मानव जीवन के स्पष्ट और अस्पष्ट पहलुओं को उपन्यास के माध्यम से व्यक्त करता है। उपन्यास मनोरंजन का एक प्रबल माध्यम है। "उपन्यास एक मनोरंजक गद्य महाकाव्य है।"[4]

समय–समय पर भारतीय विद्वानों ने भी उपन्यास को परिभाषित करने का प्रयास किया है। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द्र के शब्दों में. "मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"[5] उपन्यास समाज की विभिन्न समस्याओं का चित्रण ही नहीं करते वरन उनका समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। इस सम्बन्ध में रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है. "समाज जो रूप पकड़ रहा है, उसके भिन्न–भिन्न वर्गों में जो प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो रही है, उपन्यास उनका विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं करते, आवश्यकतानुसार उनके ठीक विन्यास, सुधार अथवा निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न करते हैं। किसी

---

1 "A Novel is the form of written prose narrative of considerable length involving the reader in an imagined real world which is new because it has been created by the author." : 'The Novel and the reader' : Prof. Katherine leaves, page 16

2 "The novel is typically a representation of human experience whether liberal or idea and therefore inevitably a comment upon life." : 'Modern fiction- A study of values' : Herbert J. Muller, Page-14

2. " In a few novels, it is a word which creates a Illusion." : 'Craft of fiction', Pery Lubbo, Page-6

4 "A comic epic in prose is of course too narrow is one direction." : Feelding

5 'प्रेमचन्द्र कुछ विचार' : प्रेमचन्द, पृष्ठ– 47

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

जन समाज के बीच काल की गति के अनुसार जो गूढ़ और चिन्त्य परिस्थितियाँ खड़ी होती रहती हैं, उनकों गोचर रूप में सामने लाना और कभी–कभी विस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना उपन्यासों का काम है।"[1]

डॉ. श्यामसुन्दर दास के अनुसार "उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।"[2] डॉ. गणेशन ने उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार दी है "उपन्यास मनुष्य के सामाजिक, वैयक्तिक अथवा दोनों प्रकार के जीवन का रोचक साहित्यिक प्रतिरूप है, जो प्रायः एक कथासूत्र के आधार पर निर्मित होता है।"[3]

डॉ. गुलाबराय के अनुसार उपन्यास कार्य–करण श्रृंखला में बँधा हुआ वह गद्यात्मक कथानक है, जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से सम्बन्धित वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव जीवन के सत्य का रसात्मक रूप से उद्‌घाटन किया जाता है।"[4] श्री शिवदास सिंह चौहान ने आधुनिक उपन्यास को साहित्य का एक नया और संश्लिष्ट रूप विधान बताया है, जिसके क्षेत्र एवं सम्भावनाएँ अपरिसीमित हैं।"[5] डॉ. भगीरथ मिश्र ने स्वाभाविक जीवन की झलक प्रस्तुत करने करने वाला गद्य काव्य को उपन्यास कहा है। "युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण व्यापक झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य उपन्यास कहलाता है।"[6]

उपन्यास की उपर्युक्त परिभाषाओं से इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता

---

1 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' : रामचन्द्र शुक्ल, सम्वत् 2008

2 'साहित्यालोचन' : डॉ. श्यामसुन्दर दास, पृष्ठ. 180

3 'हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन' : पृष्ठ–25

4 'काव्य के रूप' : बाबू गुलाबराय, पृष्ठ– 167

5 'हिन्दी उपन्यास का प्रारम्भिक विकास' : डॉ. कु0 शैलबाला, पृष्ठ–12

6 'काव्यशास्त्र' : डॉ. भगीरथ मिश्र, पृष्ठ– 79

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

है कि उपन्यास आज न केवल मनोरंजन का एक प्रबल माध्यम है, वरन उसमें वर्तमान जीवन आदर्श और यथार्थता को जीवन्त बनाने वाली विधा है। "भारतीय और पाश्चात्य मतों के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मनोरंजन का प्रबल माध्यम होने के साथ–साथ उपन्यास यथार्थ और आदर्श जीवन की कल्पित कथा समाज, व्यक्ति और उसके रीति–रिवाजों का चित्र है। उपन्यास में ऐतिहासिक सत्य कल्पना के रंग से रंजित होकर जीवन का काव्य बन जाता है।"[1]

उपन्यास की विशेषता : प्रत्येक गद्य विधा में कुछ ऐसे विशिष्ट तत्व होते हैं, जो उसे अन्य विधाओं से अलग करते हैं। उपन्यासों का अर्थ स्पष्ट करने के बाद उसकी विशेषताओं को जानना भी आवश्यक है। क्योंकि विशिष्टताओं के द्वारा ही हम उसकी पहचान कर सकते हैं और साथ ही अन्य विधाओं से तुलना भी कर सकते हैं। इसलिए उपन्यास की विशेषताओं को जानना आवश्यक है।

उपन्यास में मानव जीवन का सम्पूर्ण वर्णन मिलता है। उपन्यासकार मानव जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को सीमाबद्ध कर पाठक के सम्मुख प्रस्तुत करता है। "उपन्यास की परिपूर्णता इसी में है कि वह प्रत्येक दृश्य का वर्णन ऐसे सहज–सरल रूप में करे कि वह पूरी तरह सम्भाव्य हो उठे और इसमें (कम से कम उपन्यास पढ़ते समय) यथार्थ की प्रतीति का भ्रम होने लगे। हम सोचने लगे कि उपन्यास के पात्रों के सुख–दुःख हमारे सुख–दुःख हैं।"[2] उपन्यास में सजीवता लाने के लिए उपन्यासकार सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप से उपन्यास की रचना करते हैं।

---

1 'हिन्दी उपन्यास में खलपात्र' : डॉ. श्रीमती सरोज अग्रवाल, पृष्ठ– 55

2 The perfection of it is to present aver seen in so easy and natural a Manner and to make them appear as probable as to deceive us in to persuasion (at least while we are reading) that all is still until we are affected joys and distresses of persons in the story as if they were our own. 'The Prograss of Romance' : Jean Radford.

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

केवल गद्यात्मक रचना ही उपन्यास कहलाती है। उपन्यास की विभिन्न परिभाषाओं से स्पष्ट हो गया है कि उपन्यास के अन्दर गद्यात्मक कृतियाँ ही आती हैं पद्यात्मक रचनाओं को उपन्यास नहीं कहा जा सकता है। उपन्यास में मानव जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति होती है। "यथार्थवाद की मूल भावना वेदना है। जीवन में क्षुद्रता, दुर्बलता, विषमता और क्रूरता के कारण जो अभाव उत्पन्न होता है। अतः 'यथार्थवाद' का सीधा और प्रत्यक्ष सम्बन्ध वस्तु जगत से है, जहाँ दुर्जनों, सज्जनों और खलों के रूप में भी जीवन के अभाव साकार होते हैं।"[1]

उपन्यास में यथार्थ जीवन की जैसी अभिव्यक्ति सम्भव है वैसी किसी अन्य विधा में नहीं। विषय प्रधान रचना होने के कारण इसमें जीवन की विभिन्न परिस्थितियों, घटनाचक्रों आदि का वर्णन किया जा सकता है। उपन्यास में हमारे दैनिक जीवन में प्रतिदिन घटित होने वाली घटनाएँ होती हैं। उन घटनाओं में यथार्थता और सजीवता होती है। उपन्यास में उपन्यासकार अपनी बात को अपने चरित्रों के माध्यम से पाठक के सम्मुख रखने के साथ–साथ अपने मन के विचारों और आत्मा की आवाज को भी अभिव्यक्त करता है।

उपन्यास अपनी क्षमतानुसार बाह्य स्थिति को प्रकट करने के साथ–साथ आन्तरिक स्थिति एवं पात्र के गुण–अवगुण को भी प्रकाशित करता है। अगर उपन्यासकार पात्र की अच्छाइयों को महत्व देता है तो बुराइयों को भी उतना ही महत्व प्रदान करता है, जिससे उपन्यास की यथार्थता बनी रहे। "उपन्यास में मानव स्वभाव के सत् एवं असत् रूप उदात्त एवं अनुदात्त तत्वों का दर्शन होता है।"[2]

उपन्यास को पढ़ने में पाठक को आनन्द की अनुभूति होती है। प्रारम्भिक अवस्था में उपन्यास को केवल मनोरंजन का साधन माना जाता था, इसी कारण उन दिनों यह उपेक्षित रही, लेकिन वर्तमान समय में यह केवल

---

1 'हिन्दी उपन्यास में खलपात्र' : डॉ. सरोज अग्रवाल, पृष्ठ– 56

2 'हिन्दी उपन्यास में खलपात्र' : डॉ. सरोज अग्रवाल, पृष्ठ– 57

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

मनोरंजन तक ही सीमित नहीं है, वरन वर्तमान समय में यह एक सम्पूर्ण मानव के व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि सभी परिस्थितियों को प्रदर्शित करने वाली सशक्त विधा है।

यदि प्रेमचन्द उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मानते हैं तो उपन्यास की प्रमुख विशेषता पात्रों की सजीवता एवं स्वाभाविकता है। उपन्यासकार को उपन्यास के पात्रों का वर्णन इस प्रकार से करना चाहिए, जिससे की उसमें स्वाभाविकता आ सके। पाठक यदि उपन्यास को पढ़ता है तो उसे पात्र के साथ तादात्म्य स्थापित करना पढ़ता है। वास्तविकता और सजीवता ही आज के उपन्यास का प्रमुख आदर्श है।

उपन्यास की विभिन्न विशेषताओं को देखने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि उपन्यास मानव जीवन का वह गद्यात्मक आख्यान है, जिसमें मानव जीवन की विभिन्न घटनाओं, समस्याओं एवं परिस्थितियों का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है, जिसमें यथार्थता व सजीवता होती है। युगीन परिस्थितियों की स्पष्ट झलक उपन्यास में मिलती है।

हिन्दी उपन्यास का क्रमिक विकास : हिन्दी कथा साहित्य के विकास में प्राचीन कथा–आख्यानों, वैदिक साहित्य, पालि साहित्य आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार प्राचीन कथा साहित्य, पाश्चात्य साहित्य एवं बंगला साहित्य के प्रभाव स्वरूप हिन्दी उपन्यास का उदय हुआ। प्रारम्भिक समय में उपन्यास केवल मनोरंजन मात्र के लिए ही पढ़े जाते थे; लेकिन धीरे–धीरे इस विधा ने हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण व लोकप्रिय विधा के रूप में अपना स्थान बना लिया है।

हिन्दी उपन्यासों के विस्तृत एवं क्रमिक अध्ययन के लिए हिन्दी उपन्यासों को विभिन्न कालखण्डों में विभक्त किया गया है। उपन्यासों को अपनी प्रारम्भिक अवस्था से एक नयी दिशा देने का कार्य कथा सम्राट प्रेमचन्द ने किया था। इन्होंने उपन्यास साहित्य को पुरानी रूढ़िवादिता से निकालकार उसको

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

पूर्णतः नवीन दिशा प्रदान कर हिन्दी साहित्य में प्रतिस्थापित किया। अतः उन्हीं के आधार पर हिन्दी उपन्यासों का काल विभाजन किया गया है–

1. प्रेमचन्द से पूर्व का युग
2. प्रेमचन्द युग
3. प्रेमचन्द के बाद का युग (प्रेमचन्दोत्तर युग)
4. स्वातंत्र्योत्तर युग

प्रेमचन्द से पूर्व का युग : हिन्दी उपन्यास साहित्य का प्रारम्भ मुख्यतः अठारहवी शताब्दी में हुआ। उससे पूर्व भारतीय कथा साहित्य पौराणिक आख्यानों पर आधारित था। हिन्दी साहित्य में गद्य के अविर्भाव के साथ ही कुछ अनूदित और मौलिक कहानियों की रचना हुई। इन ग्रन्थों में लल्लूलाल का 'प्रेमसागर', इंशा अल्ला खाँ का 'रानी केतकी की कहानी' और सदलमिश्र का 'नासिकेतापाख्यान' प्रमुख हैं। "'नासिकेतोपाख्यान' एवं 'प्रेमसागर' पौराणिक आधार पर रचित ग्रन्थ हैं।"[1] "'रानी केतकी की कहानी' ही प्रथम कथात्मक मौलिक रचना है।"[2] यह किसी कथा को आधार बनाकर नहीं लिखी गयी है। यह एक लम्बी और विस्तृत कथा है–"किस देश के एक राजकुमार कुँवर उदैभान एक बार शिकार में एक हिरनी का पीछा करते–करते एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ चालीस–पचात रंडियाँ (स्त्रियाँ) झूला झूल रही थीं। उनमें से एक रानी केतकी से इनका प्रेम हो गया। राजकुमार जब अपनी राजधानी में लौटा, तब उसने राजा से इस विवाह का प्रस्ताव किया। राजा की ओर से एक ब्राह्मण उस राजा के यहाँ गया, लेकिन राजा ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया, फिर दोनों राजाओं में लड़ाई हुई। रानी केतकी के पिता ने जोगी महेन्दर की सहायता

1 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव और विकास' : डॉ. बेचन, पृष्ठ – 44

2 'हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास' : डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल, पृष्ठ–37

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

से कुँवर उदैभान और उसके माँ–बाप को हिरनी बना दिया। इधर रानी केतकी ने भी उसी योग क्रिया से कुँवर का पक्ष लिया और उसने उसे विजय दिलवाई। फिर दोनों की शादी हो जाती है।"[1]

हिन्दी उपन्यास साहित्य के विकास में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा। यद्यपि भारतेन्दु जी ने एक भी मौलिक उपन्यास की रचना नहीं की, लेकिन उन्हीं के प्रयासों से अनेक बंगला उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद हुआ। "भारतेन्दु तथा उनके सहयोगियों ने अपने निबन्धों तथा घटना, परिस्थिति, वातावरण तथा पात्रों के सजीव चित्रण तथा व्यंगगर्भ आलोचनाओं के द्वारा कहानी–उपन्यास के लिए मार्ग प्रशस्त किया।"[2]

इस काल में सामाजिक, जासूसी, ऐतिहासिक, भावप्रधान, तिलस्मी आदि अनेक प्रकार के उपन्यासों की रचना हुई। इस युग के प्रमुख लेखकों एवं उनकी रचनाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

लाला श्रीनिवास दास : लाला श्रीनिवास दास द्वारा लिखित उपन्यास 'परीक्षागुरू' (1882 ई0) को अधिकांश विद्वानों ने भाषा, वस्तु व शिल्प की दृष्टि से हिन्दी का पहला उपन्यास माना है। "'परीक्षागुरू' की मौलिक विशेषता यही है कि उसमें सर्वप्रथम यथार्थ जीवन–व्यापारों को कथा का विषय बनाया गया। न तो उसमें परंपरित ढंग की कोई प्रेमकहानी है और न विस्मयकारक घटना–विधान। तत्कालीन मध्यवर्गीय समाज तथा उसमें पलनेवाले कतिपय व्यक्तियों का वास्तविक चित्रण ही इसका ध्येय है।"[3] 'परीक्षागुरू' की कथा दिल्ली के एक रईस मदनमोहन पर आधारित है, जो विलासी है और समाज में झूठी शान दिखाने के लिए अनावश्यक खर्च करते हैं। यही अनावश्यक खर्च बाद में उनकी कुर्की का कारण बनता है। इस अवसर पर ब्रजकिशोर उनकी सहायता

---

1 'हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास' : डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल, पृष्ठ–37

2 'हिन्दी उपन्यास' : डॉ. शिव नारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ–20

3 'हिन्दी उपन्यास' : डॉ. शिव नारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ–27

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कर उनको जेल से निकालता है। उनकी ये परीक्षा उनको चाटुकारिता, सज्जनता, सावधानी, चालाकी आदि का अन्तर समझा देती है। "उपन्यास स्पष्टतः सोद्देश्य है और इसमें उपदेशवृत्ति की ही अधिकता है। आधी पुस्तक से अधिक भाग में संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी के ग्रंन्थों से उपदेशप्रद उद्धरण अथवा नैतिकशिक्षा देनेवाली कथाओं की योजना है। इससे पता चलता है कि यद्यपि लेखक ने विषय–निर्वाचन एवं वस्तु–वर्णन में अंग्रेजी उपन्यासों का अनुकरण करने का प्रयास किया फिर भी कथा–माध्यम से उपदेश देनेवाली भारतीय परम्परा को एकदम छोड़ न सके।"[1] मदनमोहन के चरित्रांकन द्वारा लेखक ने समकालीन सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। चरित्र–चित्रण, कथोपकथन एवं वातावरण शिल्प सभी माध्यमों से यथार्थता लाने का प्रयास किया है।

प0 बालकृष्ण भट्ट : भट्ट जी ने 'नूतन ब्रह्मचारी' तथा 'सौ अजान एक सुजान' नामक दो उपन्यासों की रचना की। 'नूतन ब्रह्मचारी' में नायक के माध्यम से भट्ट जी ने बालकों की शिक्षा, सदाचार, व सद्वृत्ति पर विशेष जोर दिया है। नायक विनायक अपने चरित्र के बल से डाकुओं के सरदार पर नैतिक विजय प्राप्त कर उसका हृदय परिवर्तित करता है। इस प्रकार चरित्रवान व हिंसा, द्वेष से रहित व्यक्ति दुष्ट व्यक्ति को भी चरित्रवान बना देता है। 'सौ अजान एक सुजान' एक उपदेश प्रधान रचना है, जिसमें नायक अपने चरित्रबल से कुसंगति व दुर्व्यसनों में फँसे दो भाईयों को सदाचारी बनने पर मजबूर कर देता है। भट्ट जी के दोनों उपन्यास सुन्दर शिक्षाओं से भरे हुए हैं।

देवकीनन्दन खत्री : हिन्दी उपन्यास साहित्य में तिलस्मी व जासूसी उपन्यासों के सूत्रपात का श्रेय देवकीनन्दन खत्री को जाता है। इनका पहला उपन्यास 'चन्द्रकान्ता' है, जिसमें विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता और नौगढ़ के राजकुमार वीरेन्द्र सिंह की प्रेम कहानी है। इस प्रेम कहानी में विजयगढ़ के

---

1 'हिन्दी उपन्यास' : डॉ. शिव नारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ–29

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

वजीर का लड़का क्रूरसिंह बाधक बनता है और दोनों में युद्ध होता है। अन्त में वीरेन्द्र सिंह के पक्ष की विजय होती है और दोनों का विवाह हो जाता है। तिलस्मी और ऐयारी के विभिन्न रूपों से साक्षात्कार प्रस्तुत उपन्यास में अत्यधिक होता है। इसके अतिरिक्त खत्री जी ने 'काजर की कोठरी', 'कुसुमकुमारी', 'नरेन्द्र मोहनी', 'वीरेन्द्र वीर', 'भूतनाथ', 'गुप्त गोदान', 'अनूठी बेगम', 'नौलखा हार' आदि अनेक उपन्यासों की रचना की।

किशोरी लाल गोस्वामी : गोस्वामी जी ने सामाजिक, ऐतिहासिक, ऐयारी, तिलस्मी तथा जासूसी आदि अनेक प्रकार के उपन्यासों की रचना की। इनके प्रमुख उपन्यास 'त्रिवेणी', 'कुसुमकुमारी', 'प्रणयिनी परिणय', 'हृदय–हारिणी वा आदर्श रमणी', लीलावती, 'लवंगहता वा आदर्श बाला', 'सुखशर्वरी', 'प्रेममयी', 'तारा', 'राजकुमारी', 'चपला वा नव्य समाज चित्र', 'अंगूठी का नमूना', 'लखनऊ की कब्र या शाही महलसरा', 'रजिया बेगम या रंगमहल में हलाहल', 'हीराबाई या बेहयाई का बोरका', 'पुनर्जन्म वा सैतियादाह', 'गुल बहार', 'इन्दुमती या वनबिहंगिनी', 'लावण्यमयी', 'मालती माधव वा मदन मोहनी', 'जिन्दे की लाश', 'तरूण तपस्विनी या कुटीर वासिनी' आदि हैं। इन्होंने प्रेमप्रधान उपन्यासों की रचना अधिक की है।

गोपालराम गहमरी : हिन्दी में जासूसी उपन्यासों के प्रर्वतन का श्रेय गोपालराम गहमरी जी को ही जाता है। अंग्रेजी के जासूसी उपन्यासों की प्रेरणा से उन्होंने अनेक अनुदित एवं मौलिक उपन्यासों की रचना की। इनके कुछ प्रमुख उपन्यास 'चतुर चंचला', 'भानमती', 'नये बाबू', 'नेमा', 'सॉस पतोहू', 'बड़ा भाई', 'देवरानी–जेठानी', 'डबल बीबी', 'दो बहन तीन पतोहू', 'अद्‌भुत लाश', 'खूनी कौन है?', 'बेगुनाह का खून', 'जमुना का खून', 'डबल जासूस', 'मायाविनी', 'जादूगरनी', 'मनोरमा', 'लड़की चोरी', 'जासूस की भूल', 'थाना की चोरी', 'भयंकर चोरी', 'जासूस चक्कर में', 'मालगोदाम में चोरी', 'लाइन पर लाश', 'गुप्त भेद' आदि हैं। इन्होंने 'जासूस' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

भी किया। पाठकों में रोचकता और कौतुहल बनाए रखने में इनके उपन्यास पूर्णतः सफल रहे हैं।

ब्रजनन्दन सहाय : ब्रजनन्दन सहाय के प्रमुख उपन्यासों में 'राजेन्द्र मालती', 'अद्‌भुत प्रायश्चित', 'सौन्दर्योपासक', 'राधा कौन', 'लाल चीन', 'विस्मृत सम्राट', 'विश्व दर्शन', 'अरण्य बाला' आदि हैं। 'सौन्दर्योपासक' में स्वच्छन्द प्रेम और विरह की अभिव्यक्ति हुई है। सौन्दर्योपासक में अनमेल विवाह के दुष्परिणाम व स्वच्छन्द प्रेम का वर्णन है। "इस उपन्यास का सौन्दर्योपासक नायक अपने विवाह के समय अपनी साली के रूप–यौवन पर मुग्ध होकर उससे प्रेम करने लगता है, किन्तु दोनों का संयोग तो संभव था नहीं और साली का, जो स्वयं जीजा से प्रेम करती थी, विवाह अन्य पुरूष से हो जाता है। ये दोनों ही प्रेमी विरहाकुलता में धीरे–धीरे घुलने लगते हैं। साली यक्ष्मा–रोग से ग्रसित होकर एक दिन इस दुखद संसार से प्रयाण कर जाती है। सौन्दर्योपासक की स्त्री को पति के मनोभाव का पता लग गया था और वह भी दुखी रहती थी इसी दुख में उसकी भी मृत्यु हो जाती है। पत्नी और प्रिया की मृत्यु पर रोने के लिए सौन्दर्योपासक बचे रहता है। इतनी ही सी कथा को लेकर इस उपन्यास की रचना हुई। प्रेमी के हृदय में अपने प्रति, प्रिया के प्रति, निष्ठुर जगत के प्रति जो भावनाएँ उठती हैं उसका अत्यधिक भाव प्रवणता के साथ वर्णन किया गया है।"[1] 'लालचीन' ऐतिहासिक उपन्यास है। इन्होंने अनुदित और मौलिक दोनों प्रकार के उपन्यासों की रचना की।

ठाकुर जगमोहन सिंह : 'श्यामास्वप्न' जगमोहन सिंह जी का एकमात्र उपन्यास है। इसमें श्यामा और श्यामसुन्दर के स्वच्छ प्रेम और विरह की कथा है। सम्पूर्ण कथा चार पहर के चार स्वप्न में वर्णित है। चारो प्रहर के स्वप्नों का मूलाधार श्यामा व श्यामसुन्दर की प्रेम कहानी है। बीच–बीच में श्रृंगार रस की

---

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिव नारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ – 50

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कविताओं का उपयोग भी किया गया है। इस भावप्रधान कृति में जगमोहन सिंह जी ने प्रेम की पवित्रता और स्त्री स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया है।

मेहता लज्जाराम शर्मा : इनके प्रमुख उपन्यास 'धूर्त रसिकलाल', 'स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी', 'आदर्श दम्पति', 'हिन्दु गृहस्थ', 'बिगड़े का सुधार', 'सुशीला विधवा', 'आदर्श हिन्दु' आदि हैं। 'धूर्त रसिक लाल' एक सामाजिक उपन्यास है, जिसमें अनेक शिक्षाप्रद बातों का वर्णन है। 'स्वतंत्र रमा और परतंत्र लक्ष्मी' भी सामाजिक उपन्यास है। इसमें एक ओर जहाँ पाश्चात्य ढंग की शिक्षा–सभ्यता में पली रमा के स्वच्छन्द प्रेम का वर्णन है वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कारों से युक्त, मर्यादा में रहने वाली रमा की बहन लक्ष्मी के शील व पतिव्रत आदि गुणों का वर्णन है। दोनों ही उपन्यासों में उपदेशात्मकता की प्रधानता है, जिसमें भारतीय संस्कृति एवं आदर्शों का वर्णन मिलता है। इन्होंने अपनी रचनाओं में दाम्पत्य प्रेम एवं पारिवारिक जीवन की अनेक नैतिक समस्याओं को स्थान दिया है।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔंध' : 'प्रेमकान्ता', 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' में अनमेल विवाह व उसके दुष्परिणामों को चित्रित किया गया है। यह सरल ठेठ खड़ी बोली गद्य की रचना है।

राधाकृष्ण दास : 'निस्सहाय हिन्दू' दास जी का एकमात्र उपन्यास है। गोरक्षा आन्दोलन को आधार बनाकर इसमें हिन्दू व मुस्लिम समाज की अनेक समस्याओं का अंकन किया गया है।

चन्द्रशेखर पाठक : चन्द्रशेखर पाठक जी के प्रमुख उपन्यासों में 'रमाबाई', 'अबला की आत्मकथा', 'अमीर अली का ठग', 'भारती', 'मायापुरी', 'शोषित चक्र', 'वीरांगना रहस्य' आदि उल्लेखनीय हैं। इनकी रचनाओं में कल्पना तत्व की प्रधानता है।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

हरिकृष्ण कोहली 'जौहर' : 'कुसुमलता' – चार भाग, 'कमलकुमारी' –चार भाग, 'आश्चर्य प्रदीप', 'छाती का छुरा', 'निराला नकाबपोश', 'डाकू जादूगर' – चार भाग, 'काला बाघ', 'पीला प्रकाश', 'भयानक भेद', 'गवाह गायब' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं।

दुर्गाप्रसाद खत्री : दुर्गाप्रसाद खत्री देवकीनन्दन खत्री जी के बड़े पुत्र थे। इन्होंने तिलस्मी–एयारी, जासूसी एवं सामाजिक सभी प्रकार के उपन्यासों की रचना की। 'अभागे का भाग्य', 'अनंगपाल', 'बलिदान', 'प्रोफेसर भौंदू', 'प्रतिशोध', 'रक्त मण्डल', 'लाल पंजा', 'काला चोर', 'कलंक कालिमा', 'सफेद शैतान', 'भूतनाथ', 'सुवर्ण रेखा', 'स्वर्गपुरी', 'रोहतास मठ', 'सागर सम्राट', 'साकेत', 'संसार चक्र' आदि इनकी उल्लेखनीय औपन्यासिक कृतियाँ हैं।

बलदेव प्रसाद मिश्र : इनके प्रमुख उपन्यास 'अद्भुत लाश', 'अनारकली' व 'पानीपत' हैं। 'अनारकली' में सलीम व अनारकली की प्रेमकथा का वर्णन है।

अन्य उपन्यासकार : आलोच्य युग में उपर्युक्त लेखकों के अतिरिक्त अनेक लेखकों ने उपन्यास के क्षेत्र में लेखनी चलाकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इन उपन्यासों में सामाजिक, ऐतिहासिक, जासूसी तथा तिलस्मी–ऐयारी सभी प्रकार के उपन्यासों को सम्मिलित किया गया है। इनमें हरिनारायण टण्डन का 'चाचा का खून', गोकुलानन्द प्रसाद सिंह का 'कमला', रत्नचन्द्र लीडर का 'नूतन चरित्र', रतननाथ शर्मा का 'बिछड़ी हुई दुलहिन', महावीर प्रसाद का 'जयन्ती', राधाचरण गोस्वामी का 'विधवा विपत्ति' और 'कल्पलता', विट्ठलदास का 'प्रेमकुमारी' और 'किस्मत का खेल', चुन्नीलाल खत्री का 'जबर्दस्त की लाठी', 'बालमुकुन्द वर्मा का 'कामिनी' ओर 'मालती', गंगा प्रसाद गुप्ता का 'लक्ष्मी देवी' और 'नूरजहाँ', काशीनाथ वर्मा का 'चतुर सखी', रोशनलाल का 'बुद्धिमती', विश्वेश्वर प्रसाद शर्मा का 'चन्द्रिका', देवदत्त का 'सच्चा मित्र', जैनेन्द्र किशोर का 'कमलिनी' और 'गुलेनार', लक्ष्मीनारायण शर्मा का 'समुन्द्र में गिरीन्द्र', भुवनेश्वर मिश्र का 'धराऊ घटना' और 'बलवंत भूमिहार', हनुमंत सिंह रघुवंशी का

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'चन्द्रकला' तथा 'मेरी दुःख गाथा', हरिचरण सिंह चौहान का 'वीर नारायण, गोपालदास का 'जगमग', जयरामदास गुप्त का 'कश्मीर का पतन', 'रंग में भंग' और 'मायारानी', कला प्रसाद का 'कुल कलंकिनी', रामदास वर्मा का 'राजकुमारी चन्द्रमुखी', सरस्वती गुप्ता का 'राजकुमार', जगन्नाथ शरण का 'नीलमणि', रूपनारायण का 'श्यामाकुमारी', सतीशचन्द्र बसु का 'चतुरा', जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी का 'बसंत', 'मालती' और 'संसार चक्र', रामेश्वर प्रसाद खत्री का 'मदन किशोरी', लक्ष्मीदत्त जोशी का 'जया कुसुम', वृन्दावन बिहारी का 'दो नकाबपोश', अमृत लाल चक्रवर्ती का 'सती सुखदेवी', रामप्रसाद लाल का 'हम्माम का मुर्दा', श्यामकिशोर वर्मा का 'काशीयात्रा', रामलाल वर्मा का 'जासूसी कुत्ता', 'अस्सी हजार की चोरी', 'मेहंदी का बाग', 'चालाक चोर', 'जासूस के घर खून', आत्माराम देवर का 'मनमोहनी' आदि प्रमुख हैं।

इस प्रकार प्रेमचन्द से पूर्व का उपन्यास साहित्य अपने उद्‌भव व शैशवास्था में प्रगति की ओर निरन्तर अग्रसर रहा। इस युग में सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी–ऐयारी, एवं जासूसी आदि सभी प्रकार के उपन्यासों की रचना हुई। तत्कालीन लेखकों ने सामाजिक, ऐतिहासिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों की ओर पर्याप्त ध्यान दिया। पारिवारिक समस्याओं के चित्रण को भी प्रयाप्त स्थान मिला। अपनी प्रारम्भिक अवस्था में होते हुए भी इस युग में उत्कृष्ट उपन्यासों की रचना हुई।

प्रेमचन्द युग : 1918 से 1936 तक के कालखण्ड को प्रेमचन्द युग अथवा विकास काल कहा गया। इस युग के उपन्यास साहित्य में युगीन परिस्थितियों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। अंग्रेजी शासन से त्रस्त जनता के मन में अंग्रेजी शासन के प्रति विद्रोह पनपने लगा, फलस्वरूप अनेक आन्दोलन हुए। जिनका प्रभाव तत्कालीन उपन्यासों में स्पष्ट देखा जा सकता है। इस युग के प्रमुख उपन्यासकार एवं उनके उपन्यासों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है–

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

प्रेमचन्द : हिन्दी उपन्यास साहित्य में प्रेमचन्द के पदार्पण और 1918 में उनके प्रथम उपन्यास 'सेवासदन' ने हिन्दी उपन्यासों को नयी दिशा प्रदान की। प्रेमचन्द ने उपन्यास को प्रारम्भिक युग के काल्पनिक, उपदेशात्मक एवं मनोरंजनयुक्त उपन्यासों को यथार्थ व आदर्शता के कठोर धरातल पर ला खड़ा किया। युगीन समाज की सभी समस्याओं को प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में स्थान दिया है और उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द ने प्रारम्भिक मनोरंजन प्रधान उपन्यासों के स्थान पर सामाजिक समस्याप्रधान उपन्यासों की रचना की। जीवन के उतार–चढ़ाव एवं जीवन संघर्ष ने उन्हें एक नयी दिशा प्रदान की। "उनमें एक तपस्वी की साधना थी, महाकाव्यकार की व्यापक जीवनानुभूति थी, कुशल चितेरे की रूपविधायिनी कला थी। उन्होंने जीवन को अत्यधिक निकट से जाना था और स्वयं संघर्षों के बीच से गुजर कर परिस्थितियों के थपेड़े खाकर समाज के विष को पचाकर साहित्य में शिव की प्रतिष्ठा की थी। हिन्दी उपन्यास को साहित्यिक गरिमा, सप्राणता एवं विश्वसनीयता प्रदान करने वाले वे प्रथम लेखक थे।"[1]

प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यासों में 'सेवासदन', 'वरदान', 'प्रेमाश्रय', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'प्रतिज्ञा', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' आदि हैं। इन्होंने अपने सभी उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं का वर्णन कर उनके निराकरण पर बल दिया है। 'सेवासदन' में जहाँ दहेज प्रथा के भयंकर दुष्परिणामों का वर्णन है वहीं 'प्रेमाश्रय' में किसानों के आर्थिक व सामाजिक शोषण का स्पष्ट वर्णन है। 'प्रतिज्ञा' में विधवा समस्या का वर्णन है। 'कर्मभूमि' सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं से ओतप्रोत है। 'गोदान' में ग्रामीण और शहरी जीवन की विभिन्न समस्याओं व गरीब किसानों के संघर्ष की गाथा है।

जयशंकर प्रसाद : प्रसाद जी ने सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलायी। 'कंकाल' इनका प्रथम उपन्यास है, जिसमें व्यक्ति की सहज प्रवृत्तियों एवं

---

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिवनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ – 72

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सामाजिक बन्धनों के संघर्ष को मार्मिकता से चित्रित किया गया है। इसमें मानव के यौन दुर्बलताओं का वर्णन अधिक हुआ है। निरंजन जैसा महात्मा किशोरी से प्रेम करता है, मंगलदेव पहले तारा से प्रेम करता है और उसे गर्भवती बनाकर छोड़ देता है। इसके बाद वह डाकू की बालिका से विवाह कर लेता है। इसी तरह इसाई पादरी एक अनाथ बालिका का उपभोग करना चाहता है। समस्त उपन्यास विभिन्न व्यंगों से भरा पड़ा है। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की जर्जर नग्नता को प्रस्तुत उपन्यास में प्रकट किया गया है। प्रसाद का दूसरा उपन्यास 'तितली' है। जिसकी कथा 'ककाल' की कथा से भिन्न है। जहाँ 'ककाल' में मनुष्य की यौन दुर्बलताओं का वर्णन है वहीं 'तितली' में आत्मसंयम व प्रेम के आदर्श रूप का वर्णन किया गया है। "'कंकाल' यदि यथार्थवाद की ओर उन्मुख है तो 'तितली' पूर्णतः आदर्शवादी उपन्यास है। 'कंकाल' में मानव की यौन दुर्बलता या स्खलन पर अधिक आग्रह है किन्तु इस उपन्यास में चारित्रिक दृढ़ता के साथ–साथ आदर्श प्रेम के चित्रण का प्रयास है।"[1] इसमें एक–दूसरे से सम्बद्ध दो कथायें वर्णित हैं। पहली कथा इन्द्रदेव व शैला की है, दूसरी कथा तितली और मधुवन की है। प्रसाद का तीसरा अपूर्ण उपन्यास 'इरावती' है। प्रसाद अपने उपन्यासों में मानव हृदय का मर्मस्पर्शी चित्र खींचने में सफल हुए हैं। ग्रामीण जीवन की सुन्दर झलक इनके उपन्यासों में मिलती है।

वृन्दावन लाल वर्मा : हिन्दी सहित्य में उच्चकोटि के ऐतिहासिक उपन्यासों के लेखन में वृन्दावन लाल वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने सामाजिक उपन्यासों की रचना भी की। इन्होंने ऐतिहासिक उपन्यासों की कथावस्तु में मध्ययुगीन भारतीय इतिहास की घटनाओं व चरित्रों को आधार बनाया है। 'गढ़ कुम्हार', 'विराटा की पद्मिनी', 'झाँसी की रानी', 'कचनार', 'मुसाहिबजू', 'मृगनयनी', 'सत्रह सौ उन्नीस', 'माधवजी सिन्धिया', 'भुवन विक्रम', 'टूटे काँटे', 'अहिल्याबाई' आदि इनके प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास हैं। 'गढ़कुम्हार' में चौदहवीं शताब्दी के बुन्देलखण्ड के राजनीतिक उतार–चढ़ाव का अंकन किया गया है।

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिव नारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ – 125

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

इसका प्रमुख विषय युद्ध और प्रेम है। इसमें तीन प्रेम कथाएँ हैं– नागदेव व हेमवती की कथा, अग्निदत्त व मानवती की कथा तथा तारा और दिवाकर के प्रेम की कथा, जिसमें नागदेव व हेमवती की प्रेमकथा प्रमुख है। इसी कारण खंगारों और बुंदेलों में विवाद होता है, जिसके फलस्वरूप खंगारों का विनाश होता है। 'विराटा की पद्मिनी' एक दुःखान्त ऐतिहासिक कथा है। 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' में पराधीनता के प्रति लक्ष्मीबाई के अन्दर स्थित विद्रोह की भावना व स्वतंत्रता की लड़ाई का वर्णन है। सम्पूर्ण उपन्यास महारानी लक्ष्मीबाई के जीवन चरित्र को उद्घाटित करता है। 'मुसाहिबजु' जनश्रुति पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यास है, जिसमें मुसाहिब अपने स्वामीभक्त मेहतर आश्रितों की मानरक्षा के लिए राजा से दुश्मनी मोल लेता है, लेकिन अन्त में राजा को ही झुकना पड़ता है। 'कचनार' में कचनार नामक दासी के उत्कृष्ट चरित्र को वर्णित किया गया है। 'मृगनयनी' उपन्यास में मृगनयनी व मानसिंह की मूल कथा के साथ–साथ अनेक प्रासांगिक कथाएँ भी हैं। मृगनयनी अपनी सुन्दरता, वीरता व शौर्य से विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद मानसिंह तोमर की विवाहिता बनती है।

सामाजिक उपन्यासों में 'कुण्डलीचक्र', 'प्रेम की भेंट', 'लगन', 'प्रत्यागत', 'संगम', 'अचल मेरा कोई' एवं 'अमरबेल' प्रमुख हैं। इनके अधिकांश सामाजिक उपन्यासों का विषय प्रेम है और उनमें तत्कालीन समाज की विभिन्न समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करने का सफल प्रयास किया है।

विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक : प्रेमचन्द के समकालीन उपन्यासकारों में कौशिक का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। "उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय मनोविज्ञान के अनुरूप सुधारवादी प्रवृत्ति का निरूपण हुआ है, जो समकालीन आर्यसमाज आदि सामाजिक तथा सांस्कृतिक आन्दोलनों का परिणाम है और जिनसे प्रेमचन्द परम्परा के साहित्य प्रभावित हैं।"[1] इनके सामाजिक उपन्यासों में आदर्श और यथार्थ दोनों का सम्मिश्रण मिलता है। 'माँ' और 'भिखारिणी' कौशिक

---

1 'हिन्दी उपन्यास' : डॉ. सुषमा धवन, पृष्ठ– 56

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

जी के दो प्रमुख उपन्यास हैं। 'माँ' उपन्यास में कौशिक जी ने पारिवारिक जीवन को आधार बनाया है। इसमें एक माँ का अपनी सन्तान के प्रति प्रेम व गोद लेने वाली माँ का गोद लिए हुए सन्तान के प्रति प्रेम के अन्तर को स्पष्ट किया है। 'भिखारिणी' में युवक रामनाथ और जस्सों की दुःखान्त प्रेमकथा का वर्णन है। इसमें हृदय के स्वाभाविक आकर्षण तथा सामाजिक रूढ़ियों के संघर्ष से उद्भूत व्यक्ति की पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया गया है। रामनाथ व जस्सो परस्पर प्रेम करते हैं, लेकिन भिन्न जाति होने के कारण उनका विवाह नहीं हो पाता है। रामनाथ तो घर वालों के दबाव के कारण दूसरी जगह विवाह कर लेता है, लेकिन जस्सों चिर–कुमारी रहने का व्रत लेती है। इस प्रकार सम्पूर्ण उपन्यास में उस समय की सामाजिक कठोरता का वर्णन किया गया है।

चतुरसेन शास्त्री : शास्त्री जी ने अधिकांश ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना की। उनके उपन्यासों में मौलिकता व भावुकता के दर्शन होते हैं। शास्त्री जी के आलोच्य युगीन प्रमुख उपन्यासों में 'हृदय की परख', 'व्यभिचार', 'हृदय की प्यास', 'अमर अभिलाषा' एवं 'आत्मदाह' हैं। 'व्यभिचार' में विकृत प्रेम का वर्णन किया है। 'हृदय की प्यास' में आधुनिक शिक्षा पद्धति से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का वर्णन है। 'अमर अभिलाषा' में भगवती, नारायणी, सुशीला, कुमुद, मालती और बसंती नामक विधवाओं की कथा है। इसमें पुराने अन्धविश्वासों का चित्रण कर विधवाओं की दुर्दशा का वर्णन किया है। अपनी कल्पनाशक्ति और अनुभव का अनूठा प्रयोग इन्होंने अपने उपन्यासों में किया है।

भगवती प्रसाद बाजपेयी : प्रेमचन्द की भाँति ही बाजपेयी जी ने व्यक्तिवादी उपन्यासों की रचना की। मध्यम वर्ग की विभिन्न समस्याओं का यथार्थ निरूपण इनके उपन्यासों में मिलता है। 'मीठी चुटकी', 'प्रेमपथ', 'अनाथ पत्नी', 'लालिमा', 'पतिता की साधना' बाजपेयी जी के आलोच्य काल के प्रमुख उपन्यास हैं। 'मीठी चुटकी' में हिन्दु–विवाह व्यवस्था का सुन्दर वर्णन मिलता है। 'अनाथ पत्नी' में भारतीय स्त्री के जीवन संघर्ष का वर्णन है। 'प्रेमपथ' में तारा

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

और उसके जीजा रमेश के वासना और कर्त्तव्य में परस्पर अन्तर्द्वन्द्व को दिखाया है। अन्त में पतन के किनारे पहुँचे तारा को अपनी गलती का अहसास होता है और कर्त्तव्य की विजय होती है। 'पतिता की साधना' में बाल विधवा युवती नन्दा और उसके फुफेरे देवर हरी के परस्पर प्रेमाकर्षण का वर्णन है। इनके उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक चित्रण की प्रधानता है।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' : 'उग्र' जी ने अपने उपन्यासों में विभिन्न कुरीतियों एवं समाज की दुर्बलताओं पर करारा व्यंग्य कसा है। इन्होंने श्रृंगार प्रधान उपन्यासों की रचना की। 'दिल्ली का दलाल', 'चन्द हसीनों के खतूत', 'बुधुवा की बेटी', 'शराबी', 'सरकार तुम्हारी आँखों में' 'उग्र' जी के आलोच्य युग के प्रमुख उपन्यास हैं। 'दिल्ली का दलाल' में उग्र जी ने नारी जाति के कुत्सित व्यापार का वर्णन किया है। "उपन्यास में जिस नग्न वास्तविकता का जिन ब्योरों के साथ उद्‌घाटन हुआ है वह किसी समुन्नत साहित्य के लिए वांछनीय नहीं, इस उपन्यास में स्त्रियों का कुत्सित व्यापार करने वाले नर–पिशाचों का बड़ा ही यथा–तथ्य चित्रण हुआ है।"[1]

जैनेन्द्र कुमार : जैनेन्द्र कुमार ने हिन्दी उपन्यासों को एक नयी दिशा देने का प्रयास किया कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, पात्र–योजना एवं रचना शिल्प की दृष्टि से उनमें नवीनता आ गयी है। व्यक्तिवादी व्यापकता के स्थान पर वैयक्तिकता उनके उपन्यासों की प्रमुख विशेषता है। "रचना के क्षेत्र में जैनेन्द्र न तो गाँधीवादी हैं और न आदर्शवादी हैं, वे ऐकान्तिक, भावुक और कल्पनाजीवी लेखक हैं जो वास्तविकता के प्रकाश में धूमिल दिखायी देते हैं।"[2] 'परख', 'तपोभूमि' व 'सुनीता' जैनेन्द्र के आलोच्य युग में लिखे गये उपन्यास हैं। 'परख' एक विधवा कट्‌टो की प्रेमकथा है, जो एक मास्टर की ओर आकर्षित होती है। प्रारम्भ में तो वह भावुकताजन्य आदर्शवादिता के कारण कट्‌टो से प्रेम करता है,

---

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिव नारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ – 198

2 'आधुनिक साहित्य' : नन्ददुलारे बाजपेयी, पृष्ठ– 209

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

लेकिन बाद में समाज की निन्दा व माता की उदासीनता के कारण वह बिहारी की बहन से विवाह करता है। इस प्रकार उसके प्रेम की वास्तविक परख हो जाती है। दूसरी ओर बिहारी और कट्टो का प्रेम खरा निकलता है। 'सुनीता' उपन्यास में सुनीता और हरि के परस्पर आकर्षण का वर्णन है। सुनीता श्रीकांत की पत्नी है। वह श्रीकान्त के आदेश के कारण हरि के सामने आत्मसमर्पण करती है। हरि उसे सम्पूर्ण पाना चाहता है, इसलिए सुनीता उसके सामने नग्न हो जाती है। अन्त में हरि का मोह टूटता है और वह सुनीता को छोड़कर अलग चला जाता है। प्रेमचन्द की भाँति जैनेन्द्र ने भी अपने उपन्यासों में विभिन्न सामाजिक बुराइयों को चित्रित करने का प्रयास किया है। 'परख' की भूमिका में जैनेन्द्र लिखते हैं "उपन्यास का काम है कुछ आगे की, भविष्य की सम्भावनाओं की जरा झाँकी दिखाना और जो कुछ अब है, उसकी वह हमारे सामने खोलकर रख देना।"[1]

सियाराम शरण गुप्त : मूलतः कवि हृदय सियाराम शरण गुप्त जी ने 'गोद', 'अंतिम आकांक्षा' और 'नारी' नामक तीन उपन्यासों की रचना की। 'गोद' उपन्यास में पार्वती और दयाराम के वात्सल्य–स्नेह का वर्णन है, जो अपने देवर (दयाराम के भाई) शोभाराम को पुत्रवत मानती है। शोभाराम की किशोरी से सगाई के बाद जब मेले में किशोरी छूट जाती और दूसरे दिन स्वयंसेवकों द्वारा सकुशल वापस पहुँचा दी जाती है तो गाँव वाले किशोरी की पवित्रता पर सन्देह करते हैं। दयाराम अपने भाई शोभाराम का विवाह अन्यत्र तय कर देते हैं। किशोरी की माँ भी किशोरी का विवाह एक कुरूप व्यक्ति से तय कर देती है। इससे शोभाराम व्यथित हो जाता है और वह किशोरी से चोरी–छिपे विवाह कर लेता है। स्नेहशीला पार्वती व दयाराम उन दोनों को क्षमा कर देते हैं। 'अंतिम आकांक्षा' में रामलाल नामक घरेलू नौकर का अपने स्वामी व बालिका से स्नेह का वर्णन किया गया है। वह उनके लिए अपना सर्वस्व त्यागने के लिए तैयार

1 'परख' : जैनेन्द्र कुमार, (भूमिका) पृष्ठ – 3–4

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

रहता है। लेकिन जब बिटिया का विवाह का समय आता है तो कानूनी दृष्टि से हत्या का दोषी ठहराये जाने पर उसे जेल की सजा हो जाती है। 'नारी' उपन्यास में नारी के अनुपम स्वरूप की अभिव्यक्ति की गयी है। गुप्त जी के तीनों उपन्यास ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। नैतिकता पर उन्होंने विशेष जोर दिया है। वे "भारतीय परम्पराओं को पुनर्जीवित कर ऐसी सामाजिक व्यवस्था की सृष्टि चाहते हैं, जिसमें मानवतावाद एवं नैतिकता की प्रधानता हो।"[1]

भगवती चरण वर्मा : वर्मा जी के उपन्यास समाज के विभिन्न वर्ग की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। उनकी रचनाओं में सामाजिक जीवन के साथ–साथ वैयक्तिक समस्याओं, घटनाओं, प्रेम–रोमांस एवं व्यक्ति की आन्तरिक कुण्ठाओं का वर्णन मिलता है। प्रेमचन्द युग में वर्मा जी के 'पतन', 'चित्रलेखा', 'युवराज', 'चूण्डा और चाणक्य', 'तीन वर्ष' आदि उपन्यासों की रचना की। 'पतन' ऐतिहासिक उपन्यास है। 'चित्रलेखा' में पाप व पुण्य की समस्या का चित्रण है।

ऋषभचरण जैन : प्रेमचन्द की भाँति इनके प्रारम्भिक उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का सुन्दर चित्रण मिलता है। लेकिन बाद में ये यथार्थवाद की ओर अग्रसर हो गये। आलोच्य युग में इनके 'मास्टर साहिब', 'वेश्यापुत्र', 'गदर', 'सत्याग्रह', 'बुर्केवाली', 'भाग्य', 'भाई', 'रहस्यमयी', 'चाँदनी रात', 'मधुकरी', 'मन्दिर दीप' आदि उपन्यास प्रकाशित हुए।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : 'निराला' जी ने गद्य व पद्य दोनों क्षेत्रों में लेखनी चलाकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। 'अप्सरा', 'अलका', 'निरूपमा', 'प्रभावती', 'चोटी की पकड़', 'बिल्लेसुर बकरिहा' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'अप्सरा' इनका प्रथम उपन्यास है, जो काव्यत्व के गुणों से भरा है। इस उपन्यास की नायिका कनक रंगमंच पर शकुन्तला बनती है और वह दुष्यन्त बने

---

1 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव और विकास' : डॉ. बेचन, पृष्ठ– 110

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

युवक कुमार की ओर आकर्षित होती है, जो पूर्व में भी एक अंगेज से कनक की रक्षा कर चुका था। दोनों के प्रेम में अनेक बाधाएँ आती हैं, लेकिन वे सभी बाधाओं का कुशलता से सामना करते हैं और अन्त में दो हृदयों का मिलन होता है। 'अलका' में ग्रामीण जन–जीवन एवं वहाँ की जनता पर होने वाले विभिन्न अत्याचारों का वर्णन करने का प्रयास किया गया है। इसकी भाषा भी काव्यमयी है। 'निरूपमा' उपन्यास कथा–सौष्ठव, भावानुभूति तथा रमणीयता की दृष्टि से अन्य उपन्यासों से श्रेष्ठ है।

प्रताप नारायण श्रीवास्तव : श्रीवास्तव जी के उपन्यासों में यथार्थवाद के साथ–साथ आदर्शवाद के दर्शन भी होते हैं। 'विदा', 'विकास', 'विजय', 'बयालीस', 'विसर्जन', 'बेकरी का मजार', 'विश्वास की बेदी पर', 'आशीर्वाद', 'नवयुग' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'विदा' इनका सर्वप्रथम उपन्यास है, जिसमें श्रीवास्तव जी ने भारतीय और पाश्चात्य दोनों संस्कृतियों की झाँकी प्रस्तुत की है।

चण्डी प्रसाद हृदयेश : 'मनोरमा' और 'मंगल प्रभात' हृदयेश जी के दो प्रमुख उपन्यास हैं। दोनों भाव प्रधान उपन्यास हैं। 'मनोरमा' उपन्यास में दो प्रकार के पात्रों के माध्यम से एक की शक्ति व सबलता तथा दूसरी की अशक्ति और दुर्बलता का बड़ा सुन्दर चित्रण किया गया है। सती–साध्वी मनोरमा अपने पति के संदेहशीलता के कारण एक दिन एक सुन्दर, प्रोफेसर की प्रेम भरी बातों से भ्रमित होकर उसके साथ भाग जाती है। दूसरी ओर विधवा शान्ता विभिन्न प्रलोभनों के सामने दृढ़ता से टिककर अपने धर्म का निर्वाह करती है। 'मंगलप्रभात' में धार्मिक एवं नैतिक उपदेशों की अधिकता है। जिसमें त्याग, सेवाभाव व आत्मशुद्धि की महत्ता पर बल दिया गया है।

अन्य उपन्यासकार : प्रेमचन्द युग में उपरोक्त उपन्यासकारों के अतिरिक्त भी अनेक उपन्यासकारों ने उपन्यासों की रचना की। इनमें गोविन्द बल्लभ पन्त कृत 'सूर्यास्त', 'प्रतिभा', 'मदारी', श्रीनाथ सिंह कृत 'उलझन', 'जागरण', 'प्रजामण्डल',

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'प्रभावती', अवधनारायण कृत 'विमाता', राधिका रमण प्रसाद सिंह का 'राम रहीम', 'सावनी सभा', 'पुरूष और नारी', 'सूरदास', मन्नन द्विवेदी कृत 'रामलाल व कल्याणी', जगदीश झा कृत 'आश पर पानी', विश्वम्भरनाथ जीज्जा कृत 'तुक तरूणी', धनीराम प्रेम कृत 'मेरा देश', 'वेश्या का हृदय', प्रफुलचन्द ओझा कृत 'पाप और पुण्य', जहूरबख्श कृत 'स्फुलिंग', चन्द्रशेखर शास्त्री कृत 'विधवा के पत्र', रूपनारायण पाण्डेय कृत 'कपटी', शिवरानी कृत 'नारी हृदय' आदि उल्लेखनीय हैं।

इस प्रकार प्रेमचन्द युग में हिन्दी उपन्यास साहित्य ने बहुत प्रगति की। इस युग में उपन्यास अपनी प्रारम्भिक अवस्था से उठकर यथार्थवाद की ओर अग्रसर हुआ। पुरानी विचारधाराओं से ऊपर उपन्यास में नये–नये सामाजिक मूल्यों का विकास हुआ। लेखकों ने नयी–नयी समस्याओं को उठाकर उसकी ओर ध्यान आकृष्ट किया। इस युग में उपन्यास निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर रहा।

प्रेमचन्दोत्तर युग : 1936 से 1947 के मध्य के उपन्यासों का वर्णन इस युग में किया गया है। इस युग में उपन्यास प्रगति करते हुए अत्यधिक समृद्धशाली हुआ। उसमें नूतन प्रवृत्तियों का जन्म हुआ। इस युग में कथा–शिल्प, पात्र–योजना, वर्ण्य–विषय आदि की दृष्टि से उत्कृष्ट साहित्य का विकास हुआ। इनमें जहाँ समाज के निम्न वर्ग की विभिन्न समस्याओं का अंकन हुआ है, वहीं उच्च वर्ग के विलासितापूर्ण जीवन का चित्रण भी पर्याप्त मात्रा में हुआ है। प्रेमचन्दोत्तर युगीन उपन्यासों में फ्रायड, मार्क्स आदि पाश्चात्य लेखकों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्रेमचन्द युगीन आदर्शवाद के स्थान पर मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति की प्रधानता इस युग के उपन्यासों में सर्वत्र दिखायी देती है। मानव मन में उठने वाले अन्तर्द्वन्द पर विशेष बल दिया गया है। कथावस्तु, पात्रयोजना एवं उद्देश्य की दृष्टि से प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास अपने पूर्ववर्ती उपन्यासों से भिन्न हैं। इस युग में मुख्य रूप से मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, मार्क्सवादी, यथार्थवादी एवं

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना हुई। इस युग के प्रमुख उपन्यासकारों एवं उनकी कृतियों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है–

इलाचन्द्र जोशी : प्रेमचन्दोत्तर युगीन मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में इलाचन्द्र जोशी जी का महत्वपूर्ण स्थान है। फ्रायड, एडलर व युंग का प्रभाव इनके उपन्यासों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। इन्होंने व्यक्ति के अवचेतन में दबी विभिन्न पाशविक वृत्तियों का उद्‌घाटन किया। जोशी जी ने मानव मन के इन वृत्तियों को निकालकर उसे सही दिशा में लाने का प्रयास किया है, जिससे समाज में शान्ति की स्थापना हो सके। 'प्रेत और छाया' की भूमिका में वे लिखते हैं "विश्व में तब तक अपेक्षाकृत शान्ति की स्थापना असम्भव है जब तक मानव समाज अन्तर्जीवन को उतना ही (बल्कि अधिक) महत्व नहीं देता कि जितना बाह्य जीवन को..... इसलिए मानवता के लिए सबसे कल्याण का उपाय यह है कि वह अपनी उस अज्ञात चेतना के गहरे और अधिक गहरे स्तरों में प्रवेश करके उसके भीतर जड़ जमाने वाली आदिकालीन पाशविक वृत्तियों की छानबीन और विश्लेषण करे और उस पातालपुरी की नारकीय अन्धकार में बद्ध उन संस्कारों की यथार्थता स्वीकार करके ऐसी तरकीब निकालने का प्रयत्न करे, जिससे गलत रास्ते से न होकर उन बद्ध प्रवृत्तियों का विध्वसंक विस्फोट न हो, बल्कि उचित मार्गो से उनका नियमित प्रस्फुटन हो।"[1]

जोशी जी का प्रथम उपन्यास 'घृणामयी' है, जो 1929 में प्रकाशित हुआ। आलोच्य युग में जोशी जी के 'संन्यासी', 'पर्दे की रानी' 'प्रेत और छाया' एवं 'निर्वासित' उपन्यास प्रकाशित हुए। 'संन्यासी' में एक व्यक्ति के दो स्त्रियों से प्रेम का चित्रण है। 'पर्दे की रानी' में निरंजना के माध्यम से मनुष्य के क्रियाकलापों पर उसके द्वारा अर्जित संस्कारों के प्रभाव को स्पष्ट किया गया है।

जैनेन्द्र कुमार : आलोच्य काल में जैनेन्द्र जी के 'त्यागपत्र' व 'कल्याणी' उपन्यास निकले। 'कल्याणी' में श्रीमती असरानी के माध्यम से नारी की

1 'प्रेत और छाया' : इलाचन्द्र जोशी,, पृष्ठ– 8

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सहृदयता एवं कर्त्तव्यपारायणता का चित्रण है। पति–पत्नी के मनोभावों में साम्यता न होने के कारण एक विषम समस्या पैदा हो जाती है और इस विषमता में अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को पति की इच्छा पर निछावर करने वाली कल्याणी की संघर्षपूर्ण कहानी है। 'त्यागपत्र' में नारी की सामाजिक स्थिति एवं उससे उत्पन्न समस्याओं का अंकन हुआ है। "हिन्दु समाज में स्त्री की जो नगण्य स्थिति होती है उसका बड़ा यथार्थ एवं करूण चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।"[1]

अज्ञेय : हिन्दी के मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकारों में जैनेन्द्र व इलाचन्द्र जोशी के अतिरिक्त अज्ञेय का प्रमुख स्थान है। अज्ञेय ने मानव के अहंता व सैक्स को अपने उपन्यासों का आधार बनाया है। व्यक्ति के अन्तर्मन की विकृतियों को उभारने में वे सफल हुए हैं। व्यक्ति के अन्तर्मन की गहराइयों और ऊँचाइयों, अभावों और आकांक्षाओं को जैनेन्द्र ने इतना अधिक महत्व दिया है कि इसके आगे सामाजिक प्रश्न और सामाजिक समस्याएं गौण हो गयी हैं। आलोच्य काल में अज्ञेय ने 'शेखर एक जीवनी' नामक महत्वपूर्ण उपन्यास की रचना की। व्यक्ति वैचित्यवाद इसका आधार है। उपन्यास में शेखर एक ऐसा नवयुवक है जो अहं और कामभावना से प्रेरित होकर परिवार व समाज में विद्रोह करता है। अज्ञेय ने शेखर के माध्यम से जीवन के सूक्ष्मतम भावों, सामाजिक प्रवृत्तियों व व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों को चित्रित किया है।

यशपाल : यशपाल ने अपने उपन्यासों में सामाजिक व राजनीतिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। नारी समस्या व शोषण का अंकन इन्होंने अपने उपन्यासों में किया है और समाज में होने वाले अत्याचारों व अन्यायों का विरोध किया है। 1941 में प्रकाशित 'दादा कामरेड' इनका पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में यशपाल ने अपने सामाजिक व राजनीतिक जीवन के अनुभवों को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। 'देशद्रोही', 'दिव्या' और 'मनुष्य के रूप'

---

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिवनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ– 215

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

यशपाल के अन्य प्रमुख प्रेमचन्दोत्तर युगीन उपन्यास हैं। 'देशद्रोही' में तत्कालीन राजनीतिक व सामाजिक जीवन का सफल चित्रण हुआ है। 'दिव्या' उपन्यास में प्राचीन सामन्तकालीन भारत में नारी की स्थिति एवं राजनीतिक संघर्ष का वर्णन किया है। 'मनुष्य के रूप' में मानव जीवन पर परिस्थितियों के प्रभाव का वर्णन है।

उपेन्द्रनाथ अश्क : प्रेमचन्दोत्तर युगीन उपन्यासकारों में अश्क जी का महत्वपूर्ण स्थान है। अश्क जी ने कहानी, नाटक और उपन्यास सभी में मध्यम वर्ग का चित्रण किया है। मध्यम वर्ग की विभिन्न प्रकार की समस्याओं, कुण्ठाओं व जीवन पद्धति आदि का विशद् वर्णन उनके उपन्यासों में मिलता है। 'सितारों का खेल' और 'गिरती दीवारें' अश्क जी के आलोच्ययुगीन उपन्यास हैं। 'सितारों का खेल' में रूमानी प्रेमकथा का वर्णन है। 'गिरती दीवारें' में तत्कालीन समाज के मध्यम वर्गीय परिवारों के जीवन की विभिन्न समस्याओं, संघर्षों एवं अन्तर्विरोधों का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी : आलोच्य युग में द्विवेदी जी के 'बाण भट्ट की आत्मकथा' का प्रकाशन हुआ, जिसमें संस्कृत के महान ग्रन्थ 'कादम्बरी' और 'हर्षचरित' के लेखक बाणभट्ट के जीवन वृतान्त को कथा का आधार बनाया गया है। बाणभट्ट पर उपलब्ध प्राचीन सामग्री और अपनी कल्पना के बल पर उन्होंने बाणभट्ट के चरित्र में सजीवता लाने का प्रयास किया है। "इसमें भारतीय गद्य कथा तथा पाश्चात्य शैलियों के समन्वय का सफल प्रयास किया है।"[1]

रांगेय राघव : आलोच्ययुग में रांगेय राघव के 'घरौदे', 'मुर्दों का टीला' एवं 'विषादमठ' नामक उपन्यास निकले। 'मुर्दों का टीला' में मोहनजोदड़ो की सभ्यता के रहन–सहन और विलास की कहानी है। अन्त में दैवी प्रकोप से इस सभ्यता के अन्त को दिखाया है। 'विषाद मठ' में बंगाल के अकाल और भुखमरी से मचे

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिवनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ– 354

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

हाहाकार का यथार्थ चित्रण किया है। इसमें उपन्यासकार ने जहाँ एक ओर भूखी जनता व करूण आर्तनाद करते नरकंकालों का वर्णन किया है वहीं दूसरी ओर पूँजीपतियों की निरंकुशता व स्वार्थपरता का वर्णन भी प्रस्तुत किया गया है।

अमृतलाल नागर : "अमृतलाल नागर में बड़ी मौलिक प्रेरणा, सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति, गहन अनुभूति, मानव मनोविज्ञान में गम्भीर पैठ, व्यंजक ब्यौरों के द्वारा देश–काल के चित्रण की असामान्य प्रतिभा तथा विषयानुसार नूतन रूपविधानों की क्षमता है।"[1] 'सेठ बांकेमल', 'महाकाल' तथा 'नवाबी मसनद नागर जी के आलोच्ययुगीन प्रमुख उपन्यास हैं। 'नवाबी मसनद' में नवाब साहब के जीवन की छोटी–छोटी बातों का वर्णन एवं नवाब के चारों ओर फैले स्वार्थी लोगों का चित्रण किया गया है।

भगवती प्रसाद बाजपेयी : विवेच्य काल में बाजपेयी जी के 'पिपासा', 'दो बहनें', 'त्यागमयी' एवं 'निमन्त्रण' नामक उपन्यास निकले। 'दो बहनें' में लता व आशा नामक दो बहनों के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण है, जो एक ही व्यक्ति को प्रेम करती हैं। 'निमन्त्रण' में परम्परागत नैतिक व सामाजिक भावनाओं तथा पाश्चात्य सभ्यताजनित नवीन भावनाओं का अंकन किया गया है।

अन्य उपन्यासकार : उपरोक्त उपन्यासकारों व उपन्यासों के अतिरिक्त विवेच्य काल में धर्मवीर भारती का 'गुनाहों का देवता', प्रभाकर माचवे का 'परन्तु', उदयशंकर भट्ट का 'वह जो मैंने देखा' व 'नये मोड़', ऋषभचरण जैन का 'मयखाना', 'दिल्ली का व्यभिचार', 'हर हाइनेस', 'तीन इक्के', 'दुराचार के अड्डे' आदि यज्ञदत्त शर्मा का 'दो पहलू' विष्णु प्रभाकर का 'निशिकान्त' आदि अनेक उपन्यासों की रचना हुई।

प्रेमचन्दोत्तर युग के उपन्यास, शिल्प की दृष्टि से प्रेमचन्द युग से भिन्न हैं। जहाँ प्रेमचन्द युग में भावपक्ष को महत्व दिया गया है। वहीं प्रेमचन्दोत्तर युग

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिवनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ– 373

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

में कलापक्ष का भी ध्यान रखा गया है। प्रेमचन्दोत्तर युग में चरित्र–प्रधान उपन्यासों की रचना होने लगी और पात्रों के मनोविश्लेषण द्वारा चरित्रों को स्पष्ट किया जाने लगा। शिल्प विषयक नवीनता के कारण प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास हिन्दी उपन्यास साहित्य में नवीन आयाम स्थापित करने में सफल रहा।

स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यास : स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यासों में 1947 के बाद के उपन्यासों को रखा गया है। इस काल में सामाजिक, आंचलिक, मनोविश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक सभी प्रकार के उपन्यासों का विकास हुआ। ऐतिहासिक उपन्यासों की कथावस्तु सत्य घटना पर आधारित होती है; लेकिन उसमें कल्पना का समावेश भी होता है। मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासों में व्यक्ति के अन्तर्मन के विभिन्न भावों व परिस्थितियों का चित्रण मिलता है। मनुष्य के अचेतन मन को चेतन मन में लाने का कार्य मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास ही करते हैं। आंचलिक उपन्यासों में किसी अंचल विशेष का समग्र चित्रण होता है। "आंचलिक उपन्यास तो अंचल के समग्र जीवन का उपन्यास है, उसका सम्बन्ध जनपद से होता है ऐसा नहीं, वह जनपद की ही कथा है।"[1] इस सम्बन्ध में डॉ. हरदयाल ने लिखा है "आंचलिक उपन्यास वह है, जिसमें अपरिचित भूमियों और अज्ञात जातियों के वैविध्यपूर्ण जीवन का चित्रण हो, जिसमें वहाँ की भाषा, लोकोक्ति, लोककथायें, लोकगीत, मुहावरें और लहजा, वेशभूषा, धर्म, जीवन, समाज, संस्कृति तथा आर्थिक और राजनीतिक जागरण के प्रश्न एक साथ उभर कर आयें।"[2]

जैनेन्द्र : जैनेन्द्र प्रेमचन्दोत्तर काल से ही हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बना चुके थे। जैनेद्र के स्वतंत्रता के बाद निकलने वाले उपन्यासों में 'सुखदा', 'विवर्त', 'व्यतीत', 'जयवर्धन', 'मुक्तिबोध' और 'अनामस्वामी' प्रमुख हैं। 'सुखदा' में सुखदा अपने कल्पनानुकूल पति न मिलने से कुण्ठित है। 'विर्वत'

---

1 'हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा' : रामदरश मिश्र, पृष्ठ–188

2 'आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य' : डॉ. हरदयाल, पृष्ठ –80

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

और 'व्यतीत' की नायिकायें भी अपने प्रेमी से विवाह न हो पाने के कारण विवाह के बाद भी पति व प्रेमी के दायित्वों के निर्वाह के द्वन्द्व से जूझती रहती हैं। नारी की दयनीय स्थिति व उसके संघर्ष का चित्रण जैनेन्द्र के उपन्यासों में मिलता है। जैनेन्द्र के सम्बन्ध में मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है– "जैनेन्द्र के अधिकांश उपन्यासों की मुख्य चिंता भारतीय स्त्री की स्वतंत्रता है। यह जरूर कहा जा सकता है कि वह स्वतंत्रता मानसिक अधिक है और सामाजिक कम। लेकिन क्या मानसिक मुक्ति के बिना सामाजिक मुक्ति संभव है? स्त्री की पराधीनता और स्वाधीनता के केन्द्र में है स्त्री–पुरूष का सम्बन्ध। जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों में स्त्री पुरूष के बीच के सम्बन्धों की विविधता और जटिलता को जीवन के विभिन्न प्रसंगों में रखकर अनेक कोणों से देखने समझने और समझाने का प्रयास किया है।"[1]

इलाचन्द्र जोशी : स्वतंत्रता के बाद जोशी जी के उपन्यासों में 'मुक्तिपथ', 'सुबह के भूले', 'त्याग का भोग', 'जहाज का पंछी', 'ऋतुचक्र', 'भूत का भविष्य' व 'कवि की प्रेयसी' प्रमुख हैं। इन उपन्यासों में जोशी जी ने व्यक्ति की पाशविक वृत्तियों, उनके कुण्ठाग्रस्त मन, उनकी दमित कामभावनाओं और अहंभाव को चित्रित करने का प्रयास किया है। 'जहाज का पंछी' में एक ऐसे नवयुवक की कहानी है, जो परिस्थितिवश इधर–उधर भटकता है और अन्त में उसी पथ पर अग्रसर होता है, जिसे अपनाने की साध वह प्रारम्भ से ही संजोये हुए था।

अज्ञेय : स्वातंत्र्योत्तर युग में अज्ञेय के 'नदी के द्वीप' और 'अपने अपने अजनबी' नामक दो उपन्यासों का प्रकाशन हुआ। 'शेखर एक जीवनी' की तरह ही 'नदी के द्वीप' भी एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें प्रेम व यौन सम्बन्धों के आधार पर भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से पात्रों के अन्तर्मन में उठने वाले भावों को लेखक ने चित्रित करने का प्रयास किया है। वर्तमान समय में नारी–पुरूष के बीच उत्पन्न तनाव व परिवर्तनों को अज्ञेय ने व्यक्तिगत रूचि–अरूचि और

---

1 'आजकल' अंक– 8 सम्पादक–प्रवीण उपाध्याय, दिसम्बर 2005, पृष्ठ – 28

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

स्वतंत्र निर्णय तक ही सीमित कर दिया है। "सामाजिक विधि–निषेध से किंचित तटस्थ, परम्परित जीवन व्यवस्था से कुछ विच्छिन्न, समाजकृत रूढ़ियों, बन्धनों, व्यंजनाओं से मुक्त यह कुछ व्यक्तियों का अपना जगत है जो अपनी प्रवृत्तियों के अनुसार आचरण करते हैं और जीवन की एक नई दिशा की ओर संकेत करते हैं। उनके लिए सामाजिक नियमों का इतना ही मूल्य है कि वे उनके अवरोधात्मक पक्ष से विद्रोह की प्रेरणा लें।"[1] 'अपने–अपने अजनबी' में मनोविज्ञान और अस्तित्ववाद दोनों के दर्शन होते हैं। इसमें बर्फ के चट्टानों से बन्द घर में कैद दो अजनबी स्त्रियों की मानसिक अनुभूतियों का सूक्ष्म चित्रण किया गया है।

यशपाल : आलोच्य युग में यशपाल जी के 'मनुष्य के रूप', 'झूठा सच' (दो भाग), 'अमिता', 'बारह घण्टे', 'अप्सरा का श्राप' और 'मेरी तेरी उनकी बात' नामक उपन्यासों की रचना हुई। 'मनुष्य के रूप' में सामाजिक विषमताओं से मानव जीवन में उत्पन्न विभिन्न परिस्थितियों व परिवर्तनों का यथार्थ और सजीव चित्रण किया है। 'झूठा सच' विभाजन से पूर्व लाहौर की पृष्ठभूमि पर लिखा गया एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। जिसमें विभाजन और उससे उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का स्पष्ट अंकन किया है। "'झूठा सच' देश विभाजन और उसके परिणाम के चित्रण की काफी ईमानदारी से लिखी गई कहानी है। पर यह उपन्यास इस कहानी तक सीमित नहीं है। देश विभाजन की सिहरन उत्पन्न करने वाली इस कहानी में व्यक्ति के स्नेह, मानसिक और शारीरिक आकर्षण, महत्वाकांक्षा, घृणा, प्रतिहिंसा आदि की अत्यन्त सहज प्रवाह से बढ़ने वाली मानवतापूर्ण कहानी भी मिलेगी।"[2] 'अमिता' ऐतिहासिक उपन्यास है, "इस उपन्यास में कलिंग विजय के समय अपने द्वारा किये गये भयंकर नर–संहार तथा दूसरी ओर कलिंग के स्वर्गीय महाराज की पुत्री शिशु–साम्राज्ञी अमिता की बाल सुलभ, सरलता, निश्छलता और अहिंसात्मक निर्भीकता से प्रभावित होकर

1 'हिन्दी उपन्यास' : शिवनारायण श्रीवास्तव, पृष्ठ –315–316

2 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव और विकास' : डॉ. बेचन, पृष्ठ – 171

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन की कथा का चित्रण किया गया है।"[1] 'झूठा सच' में स्वतंत्रता के बाद की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक आदि समस्याओं का चित्रण हुआ है। 'अप्सरा' में स्त्री शोषण की कहानी है, 'मेरी तेरी उसकी बात' में भी नारी की दयनीय स्थिति और उससे मुक्ति की कहानी का अंकन हुआ है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' : हिन्दी के आंचलिक उपन्यासकारों में 'रेणु' का महत्वपूर्ण स्थान है। 'मैला आंचल' और 'परती परिकथा' में अंचल विशेष के जीवन का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। 'मैला आंचल' में पूर्णिया जिले के मैरीगंज गाँव की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक दशा का सभी पहलुओं के माध्यम से अंकन किया गया है। 'परती परिकथा' में परानपुर की कहानी है। 'जलूस', 'दीर्घतपा', 'कितने चौराहे', 'कलंकमुक्ति' और 'पल्टूबाबू रोड' इनके अन्य प्रमुख उपन्यास हैं। 'जलूस' एक नये गाँव के उदय की कहानी है जिसमें "नया समाज उसकी नयी समस्याएँ तथा उसके बीच से उठने वाले नये सवालों से कथाकार बारम्बार जूझता हुआ दृष्टिगोचर होता है।"[2] 'दीर्घतपा' उपन्यास नागरिक भ्रष्टाचार की कहानी है। जिसमें वेला गुप्त के माध्यम से सत्य के लिए मुसीबत झेलने, मुजरिम होने, लांछित होने, सजा पाने आदि कठिनाइयों को चित्रित किया है। 'पल्टू बाबू रोड' एक लघु उपन्यास है, जिसमें नैतिक गिरावट एवं भ्रष्टाचार की कहानी है।

नागार्जुन : 'रेणु' की तरह नागार्जुन ने भी आंचलिक उपन्यासों के लेखन में पर्याप्त ख्याति अर्जित की। इन्होंने मैथिल अंचल विशेष के ग्रामीण जीवन के विभिन्न समस्याओं का सूक्ष्म अवलोकन कर वहाँ के रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान, छुआ–छूत आदि का वर्णन किया है। इनके प्रमुख उपन्यास 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दुखमोचन', 'वरूण के बेटे'

---

1 'आधुनिक हिन्दी साहित्य' : डॉ. राम गोपाल सिंह चौहान, पृष्ठ – 256

2 'समकालीन हिन्दी उपन्यास' : डॉ. विवेकी राय, पृष्ठ– 60

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

आदि हैं। 'रतिनाथ की चाची' में एक संतानहीन विधवा के दुःखद जीवन का वर्णन है। 'बलचनमा' में शोषण एवं उत्पीड़न के खिलाफ बलचनमा के संघर्ष का वर्णन है। इसकी कथा बिहार के दरभंगा जिले की है। बलचनमा अपनी कथा स्वयं ही पाठकों के सामने रखता है। 'नई पौध' मिथिला के एक गाँव के सामाजिक जीवन की कथा है, जिसमें वहाँ के रीति–रिवाज, आचार–व्यवहार आदि का वर्णन किया गया है। 'बाबा बटेसरनाथ' एक गाँव के उत्थान–पतन एवं सामाजिक और राजनीतिक रूप के चित्रण की कथा है। इसमें एक बट वृक्ष स्वप्न में एक व्यक्ति को अपनी व्यथा–कथा सुनाता है। 'वरूण के बेटे' में मछुवारों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है।

रामदरश मिश्र : स्वातंत्र्योत्तर युगीन हिन्दी उपन्यासकारों में रामदरश मिश्र का महत्वपूर्ण स्थान है। मिश्र जी के लेखन का मूल स्वर गाँधीवाद और समाजवाद है। इनके प्रमुख उपन्यास 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', 'बीच का समय', 'सूखता हुआ तालाब', 'अपने लोग', 'रात का सफर', 'आकाश की छत', 'बिना दरवाजे का मकान', 'दूसरा घर' आदि हैं। 'पानी का प्राचीर' और 'जल टूटता हुआ' आंचलिक उपन्यास हैं। 'पानी के प्राचीर' में अंग्रेजों के शोषण, जमीदार के अत्याचारों, बेकारी, बाढ़, प्लेग, आदि से त्रस्त पूर्वांचल के सर्वाधिक पिछड़े जिले गोरखपुर के एक गाँव की कहानी है। 'जल टूटता हुआ' में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के ग्रामीण जीवन का वर्णन है। "यह स्वाधीनता प्राप्ति के बाद के गाँव जीवन का अनुभूत यथार्थ बिम्ब है, जो औपन्यासिक रचनाशीलता के तकाजों से जूझता हुआ अपनी सीमा और विशिष्टता के स्तरों को खोलता चलता है।"[1] 'सूखता हुआ तालाब' ग्रामीण जीवन में हो रहे निरन्तर गिरावट व पीड़ा को चित्रित करता है। 'अपने लोग' प्रगतिशील गाँधीवादी विचारधारा से ओतप्रोत प्रमोद की कहानी है। 'रात का सफर' ऋतु नामक एक नारी की करूण दास्तान है। 'आकाश की छत' उपन्यास कठिन अकेलेपन की संघर्ष गाथा है।

1 'हिन्दी के आंचलिक उपन्यास' : ज्ञानचन्द्र गुप्त, पृष्ठ– 164

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'बिना दरवाजे का मकान' में ससुराल से प्रताड़ित और तिरस्कृत होकर सुखी जीवन का सपना सँजोकर दिल्ली महानगर में आने वाली दीपा की संघर्ष गाथा है। दिल्ली में दुर्घटना से पति के शारीरिक रूप से अकर्मण्य हो जाने के बाद जीवनयापन के लिए उसके संघर्ष को प्रमुखता से कथाकार ने उभारा है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद द्विवेदी जी के तीन उपन्यास 'चारूचन्द्रलेख', 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा' निकले। तीनों उपन्यास ऐतिहासिक हैं। "'चारूचन्द्रलेख' अतीत की दार्शनिक और साधनात्मक पृष्ठभूमि में वर्तमान युग चेतना की प्रतिष्ठा करने वाला उपन्यास है।"[1] विराट स्तर पर ऐतिहासिक सर्जनात्मकता को इनके इस उपन्यास में देखा जा सकता है। द्विवेदी जी जानते हैं कि विभिन्न सामाजिक विकृतियों को जन–जागृति के बिना दूर नहीं किया जा सकता है, इसलिए जन–जागृति का आह्वान भी इस उपन्यास में हुआ है। इस सम्बन्ध में राजेन्द्र गौतम लिखते हैं– "'चारूचंद्रलेख एक अत्यन्त रोचक उपन्यास ही नहीं है, इसके एक–एक पृष्ठ से आह्वान का स्वर भी गुंजित होता है, जो सैकड़ों वर्षों के बाद भी भारतवासियों की नसों में नए रक्त का संचार करता रहेगा।"[2] 'पुनर्नवा' उपन्यास में गुप्तकालीन इतिहास से संबद्ध अनेक घटनाओं को उजागर किया है। राजेन्द्र गौतम लिखते हैं– "एक ओर इसमें आभीर संस्कृति का मूर्त चित्र उभरा है, दूसरी ओर यह कृति आततायी एवं दुर्दम शक्तियों के साथ नैतिक शौर्य के संघर्ष की महामाया के रूप में एक पूरे युग संदर्भ को उद्घाटित करती है। इसमें परंपरा का आख्यान ही नहीं है, बल्कि परिवर्त्तमान सामाजिकता के प्रगतिशील मूल्यों की अभिव्यक्ति भी है। यह उपन्यास एक विराट फलक पर उस युग के प्रत्येक वर्ग को चित्रित करता है।"[3] 'अनामदास का पोथा' में सामान्य जन–जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का चित्रण है। इसमें यह बताया गया है कि ऊँची तप साधना यदि जन–सामान्य के

---

1 'हिन्दी उपन्यास में प्रतीकात्मक शिल्प' : डॉ. शुशीला शर्मा, पृष्ठ – 319

2 'आजकल' : सम्पादक : योगेन्द्र दत्त शर्मा, अंक – 6, अक्तूबर 2007, पृष्ठ – 39

3 'आजकल' : सम्पादक : योगेन्द्र दत्त शर्मा, अंक – 6, अक्तूबर 2007, पृष्ठ – 39

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सुख–दुःख में सहभागी न बने तो वह व्यर्थ है।

कमलेश्वर : स्वातंत्र्योत्तर युग के उपन्यासकारों में कमलेश्वर का प्रमुख स्थान है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री–पुरूष या पति–पत्नी सम्बन्ध, भारत की स्वाधीनता, देश का विभाजन, स्वतंत्रता के बाद भारत की राजनीतिक, आर्थिक समस्याएँ आदि अनेक विषयों को चुना है। इनके प्रमुख उपन्यास 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ', 'लौटे हुए मुसाफिर', 'तीसरा आदमी', 'डाक बंगला', 'समुद्र में खोया हुआ आदमी', 'काली आँधी', 'आगामी अतीत', 'वही बात', 'सुबह–दोपहर–शाम', 'रेगिस्तान' ओर 'कितने पाकिस्तान' हैं। 'लौटे हुए मुसाफिर' में पाकिस्तान के नाम पर छले गए विपन्न मुसलमानों की पीड़ा का वर्णन है। 'तीसरा आदमी' में महानगरीय परिवेश में पति–पत्नी के बीच तीसरे आदमी के आने के संदेह और इस संदेह के कारण दांपत्य जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन है। 'डाक बंगला' में एक ऐसी स्त्री की कथा का वर्णन है जो स्वच्छन्द जीवन जीने को मजबूर हुई है। उसके सम्बन्ध अनेक पुरूषों से हैं लेकिन फिर भी वह सुखी नहीं हो पाती है। 'समुद्र में खोया आदमी' जीविकोपार्जन के लिए भटकते हुए एक व्यक्ति की कथा है जो समाज रूपी समुद्र में खो जाता है और कभी लौट कर घर वापस नही आ पाता है। 'काली आँधी में दांपत्य जीवन की विषमता, पत्नी की महत्वाकांक्षाओं आदि से उत्पन्न विभिन्न परिस्थितियों का अंकन किया गया है। हरदयाल लिखते हैं– "काली आँधी' में विषम विवाह, पत्नी की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं और उस विवाह के बिखरने की व्यथापूर्ण कथा कही गई है। आगामी अतीत में स्त्री–पुरूष के संबंधों से पूँजीवादी अर्थतंत्र में उत्पन्न चूहा–दौड़ के संदर्भ में पड़ताल की गई है। कहानी कुछ–कुछ रोमांटिक है, लेकिन उसकी रूमानियत को तोड़ा गया है। 'वही बात' में महत्वाकांक्षी पति द्वारा पत्नी की उपेक्षा, पत्नी के अन्य पुरूष से सम्बन्ध, तलाक और पत्नी के पुनर्विवाह की कथा प्रस्तुत की गई है। उस उपन्यास में भी दांपत्य की विषमता और उससे मुक्ति के आधुनिक उपाय

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

संकेतित हैं।"[1] कमलेश्वर के अधिकांश उपन्यास व्यक्ति प्रधान हैं। 'सुबह....दोपहर. ...शाम' में स्वाधीनता आंदोलन में योगदान देने वाले दूर–दराज के अनेक सामान्य परिवारों का उद्‌घाटन किया है, जो अपने कर्त्तव्यों का पालन बड़ी निष्ठा से करते हुए देशभक्ति का परिचय देते हैं। 'रेगिस्तान' में स्वतंत्रता से पूर्व व बाद की विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन किया गया है।

राजेन्द्र यादव : राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में स्वतंत्रता के बाद के संघर्ष, उत्थान एवं पतन, जीवन मूल्यों एवं विचारों का यथार्थ अंकन हुआ है। 'प्रेत बोलते हैं', 'उखड़े हुए लोग', 'सारा आकाश', 'शह और मात', 'कुलटा', 'मुखर चिन्तन' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। प्रथम उपन्यास 'प्रेत बोलते हैं में निम्न मध्यवर्ग के एक शिक्षित युवक के जीवन की विवशताओं तथा विषमताओं का वर्णन चित्रात्मक शैली में किया है। 'उखड़े हुए लोग' में राजेन्द्र यादव ने स्वार्थसिद्ध में मनुष्य के पतन, कांग्रेस शासन की नीतियाँ, विवाह, प्रेम, अतृप्त कामवासना, व्यभिचार, मजदूर संघर्ष, शोषण आदि का विविध ढंग से चित्रण किया गया है। 'सारा आकाश' में निम्न–मध्यम वर्गीय समाज की परम्पराओं एवं रूढ़िवादिताओं का अंकन है। 'शह और मात' में घटनाओं और परिस्थितियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन हुआ है।"[2] 'कुल्टा' में व्यक्ति को केन्द्र में बनाकर जीवन की व्यापक समस्याओं का अंकन हुआ है।

डॉ. देवराज : डॉ. देवराज हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में प्रमुख स्थान रखते हैं। 'पथ की खोज', 'बाहर–भीतर', 'रोड़े और पत्थर', 'अजय की डायरी', 'मैं वे और आप', 'दूसरा सूत्र' आदि देवराज जी के प्रमुख उपन्यास हैं। 'पथ की खोज' में पारिवारिक समस्याओं के साथ–साथ साहित्यिक एवं

---

1 'आजकल' : सम्पादक : प्रवीण उपाध्याय, अंक – 1, मई, 2005, पृष्ठ– 112

2 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य में शिल्पविधि का विकास' : डॉ. राधेश्याम कौशिक पृष्ठ–298

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सामाजिक संस्थाओं, कालेज का वातावरण, साहित्यकारों के जीवन, प्रकाशकों द्वारा लेखकों के शोषण आदि का वर्णन किया गया है।

हिमांशु जोशी : समकालीन उपन्यास लेखकों में जोशी जी विशिष्ट स्थान रखते हैं। 'महासागर', 'अरण्य', 'छाया मत छूना मन', 'बुराँश फूलते तो हैं', 'कगार की आग', 'समय साक्षी है', 'तुम्हारे लिए', 'सुराज' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'कगार की आग', 'तुम्हारे लिए' और 'सुराज' आंचलिक उपन्यास हैं। 'अरण्य' उपन्यास कूर्मांचल के ग्रामीण अंचल के गरीबी से युक्त जीवन की प्रामाणिक झलक प्रस्तुत करता है। ग्रामीण विकास की विभिन्न योजनाओं के बावजूद भी गाँव की दयनीय स्थिति का वर्णन लेखक ने अत्यधिक मनोयोग से किया है। "यहाँ सबल अबलों को खाते हैं। बकरियों को जैसे बाघ खा जाते हैं, आदमियों को उतनी ही आसानी से पटवारी निगल जाता है। उच्च ब्राह्मणवंशी इतने भयानक गरीब पहली बार दिखे। निराश–उदास लोगों के इस जंगल में जहाँ अन्तर–बाह्य सूनेपन की बाढ़ आई है।"[1] 'छाया मत छूना मत' एक विस्थापित परिवार की कहानी है। 'कगार की आग' में पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाले पिछड़े वर्ग के अन्तहीन संघर्ष की कथा को लोहार–हरिजन जाति में पैदा हुई गोमती की करूण कथा के माध्यम से चित्रित किया है। गोमती का शोषण बाहरी लोग ही नहीं करते वरन् उसी जाति के लोग भी करते हैं। मानसिक रूप से विक्षप्त उसके पति पिरमा की तेजुबा के हाथों नृशंस हत्या का बदला लेने के लिए वह औरत जात की कसम खाकर पूरे गाँव को प्रतिशोध की आग में फैंक देती है। 'समय साक्षी है' में विभिन्न राजनीतिक विसंगतियों का वर्णन किया है। 'सुराज' में तीन लघु कथाएँ 'सुराज', 'अंधेरा और' व 'कांछा' हैं। 'सुराज' एक स्वाधीनता सेनानी की कथा है। 'अंधेरा और' में हिमालय की तराई में रहने वाले आदिवासी थारू लोगों की कथा है। 'कांछा' में नेपाल तथा भारत की सरहद पर रहने वाले अनाथ घरेलू नौकर की दास्तान है।

---

1 'समकालीन हिन्दी उपन्यास' : डॉ. विवेकी राय, पृष्ठ – 122

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

रांगेय राघव : राघव जी के स्वतंत्रता के बाद के उपन्यासों में 'चीवर', 'सीधा सादा रास्ता', 'हुजूर', 'काका', 'कब तक पुकारूँ', 'बन्दूक और बीन', 'बौने और घायल फूल', 'छोटी सी बात', 'धरती मेरा घर', 'प्रतिदान', 'पक्षी और आकाश', 'अंधेरे के जुगनू', 'राह न रूकी', 'पथ का ताप', 'कल्पना', 'दायरे', 'प्रोफेसर', 'पतझर', 'आखिरी आवाज' आदि प्रमुख हैं। इन उपन्यासों में राघव जी ने विभिन्न सामाजिक समस्याओं का अध्ययन कर उनके निराकरण की ओर ध्यान आकृष्ट किया है।

नरेन्द्र कोहली : कोहली जी के प्रमुख उपन्यासों में 'पुनरारम्भ', 'साथ सहा गया दुख', 'आश्रितों का विद्रोह', 'आतंक', 'जंगल की कहानी', 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर', 'युद्ध', 'आत्मदान' आदि हैं। विषय वैविध्य इनके उपन्यासों की प्रमुख विशेषता है।

शिव प्रसाद सिंह : स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यासकारों में शिव प्रसाद सिंह ऐसे उपन्यासकार हैं, जिन्होंने ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण किया हैं। 'अलग–अलग वैतरणी', 'गली आगे मुड़ती है', 'दिल्ली दूर है', 'औरत', 'कुहरे में युद्ध', 'वैश्वानर' आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं। 'अलग–अलग वैतरणी' में शिव प्रसाद सिंह जी ने ग्रामीण अंचल के समस्त चित्रों को उभारा है।

मनोहर श्याम जोशी : स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासकारों में मनोहर श्याम जोशी जी का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रमुख उपन्यास 'कुरू–कुरू स्वाहा' (1980), 'कसप' (1982), 'ट–टा प्रोफेसर' (1995), 'हमजाद' (1998), 'हरिया हरक्यूलीज की हैरानी' (1999) और 'क्याप' (2001) हैं। 'कसप' 'हरिया हरक्यूलीज की हैरानी' एवं 'क्याप' आंचलिक उपन्यास हैं। जिसमें कुमाऊँ अंचल के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का स्पष्ट अंकन किया गया है। इनका प्रथम उपन्यास 'कुरू–कुरू स्वाहा है, जिसमें बंबई नगर के बुद्धिजीवी एवं अपराध जगत का सुन्दर चित्रण हुआ है। 'कसप' में कुमॉउनी भाषा और संस्कृति की स्पष्ट झलक मिलती है। डॉ जगत सिंह बिष्ट लिखते हैं– "इसके सृजन के द्वारा

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

कुमॉउनी भाषा के साथ–साथ और कुमाऊँ के सामाजिक–सांस्कृतिक सरोकारों को राष्ट्रीय पहचान मिली थी क्योंकि इसमें उपन्यासकार ने जिस प्रकार से कुमाऊँ के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों को पेस्टीज एवं पेरोडी के द्वारा प्रस्तुत किया है वह प्रस्तुति अन्यतम है।"[1] 'ट–टा प्रोफेसर' एक लघु कलेवर वाला उपन्यास है, जिसमें उत्तर आधुनिक बहुत सारी परिस्थितियाँ समाहित हैं। 'हमजाद' भी 'ट–टा प्रोफेसर' की भाँति उत्तर आधुनिक विभिन्न परिस्थितियों को अपने में समाहित किये है कथ्य और शिल्प की दृष्टि से इसमें नवीनता है।

'हरिया हरक्यूलीज की हैरानी' कुमाऊँ अंचल की विभिन्न चरित्रों, भाषा आदि को प्रकट करता है। डॉ. जगत सिंह बिष्ट लिखते हैं– "प्रवासी कुमाऊँ अंचल की एक बिरादरी के भीतर से आंचलिक चरित्रों और भाषिक तेवरों के द्वारा उत्तर आधुनिकता की छानबीन करता, यह उपन्यास 'भाषा–खेल' (ल्योतार) भी है जिसमें एक पाठ दूसरे पाठ को बौद्रीया की 'छलना' भी बनाती है। फलतः उपन्यास में कई गुट बनते हैं और इन्हीं गुटो के द्वारा एक पाठ दूसरे पाठ को खोलता, छलता और चुनौती देता है। एक बिरादरी के लोगों को इतने पाठ और अंतर्पाठ इस उपन्यास के चरित्रों के लिए हैरानी का कारण बनते हैं। कुल मिलाकर इस उपन्यास में मनोहर श्याम जोशी के प्रमुख चरित्र हरिया और उसी की बिरादरी के अन्य चरित्रों की हैरानी के द्वारा समाज, इतिहास, दर्शन के बने–बनाए ढांचे को समस्याग्रस्त चित्रित किया है।"[2] 'क्याप' उपन्यास में कुमाऊँ अंचल के लोकजीवन से सम्बन्धित विभिन्न किस्सागोई का वर्णन है जो पाठकों को मुस्कराने पर मजबूर कर देती है।

निर्मल वर्मा : स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यासकारों में निर्मल वर्मा अपनी भाषा और शिल्प के कारण अत्यधिक जाने जाते हैं। इनके प्रमुख उपन्यास 'वे दिन', 'लाल टीन की छत', 'एक चिथड़ा सुख', 'रात का रिपोर्टर' और अंतिम अरण्य'

---

1 'आधारशिला' : दिवाकर भट्ट, अंक– 45–46, जनवरी– अप्रेल, 2007, पृष्ठ – 40

2 'आधारशिला' : दिवाकर भट्ट, अंक– 45–46, जनवरी–अप्रेल–2007, पृष्ठ – 42

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

हैं। 'वे दिन' इनका प्रथम प्रकाशित उपन्यास है। "'वे दिन' में आधुनिक जीवनदृष्टि, स्थानीय रूचि, वेचित्र्य और शिल्प का नूतन प्रयोग हिन्दी उपन्यास का एक नया क्षितिज होता है। 'वे दिन' का परिवेश एवं पृष्ठभूमि में विदेशीपन है। लेखक ने योरोप के युद्धोत्तर समाज का चित्रण किया है, आस्थाहीन व लक्ष्यहीन है। चेकोस्लोवाकिया में चुँकि लेखक स्वयं रहा है, अतः देशकाल का विवरण सही माना जा सकता है।"[1] निर्मल वर्मा के पात्रों के सम्बन्ध में क्षितिज शर्मा लिखते हैं– "निर्मल वर्मा के पात्रों की जीवन पद्धति बिल्कुल अलग तरह की है, वे प्रेमचंद की पंरपरा–जिसे भारतीय लेखन परंपरा भी कहा जा सकता है, से अलग ठहरते हैं। वे आम भारतीय आदमी की समस्याओं और जीवन दर्शन से हटकर हैं। इस अर्थ में देखा जाए तो उनकी भाषा के सम्मोहन ने एक पीढ़ी को यथार्थ की जमीन से हटाकर एक रोमानी दुनिया के आंतरिक द्वंद्व में निजी प्राप्ति को महत्व देने का काम ही अधिक किया है। निःसंदेह उस भाषा में पठनीयता है, रोचकता है और एक ऐसे लोक से बाँधने की शक्ति है, जो कुछ देर के लिए यथार्थ से हटकर कथा रस में डुबो दे।"[2]

भीष्म साहनी : भीष्म साहनी के उपन्यासों का कथ्य आम आदमी की जीवन्त कथा है। उन्होंने अपने उपन्यासों में आम आदमी की विभिन्न त्रासदियों व कुरूपताओं का केवल चित्रण ही नहीं किया है बल्कि उनसे मुक्ति हेतु संघर्ष का आह्वान भी किया है। इनका प्रमुख उपन्यास 'झरोखे', 'कड़ियाँ', 'तमस', 'बसन्ती' आदि हैं। 'झरोखे' में पुराने संस्कारों व आदर्शों से युक्त नवीन पीढ़ी का स्वतंत्र जीवन जीने एवं प्रगतिशील विचारों से युक्त नवीन पीढ़ी के परस्पर अन्तर्विरोधों को चित्रित किया है। नवीन पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के बर्चस्व और हस्तक्षेप को किंचित भी नहीं स्वीकारते हैं। 'कड़ियाँ' उपन्यास में आधुनिकता के प्रभावस्वरूप मध्यवर्गीय परिवार के टूटन की समस्या को चित्रित किया है। 'तमस' भीष्म साहनी का एक चर्चित एवं महत्वपूर्ण उपन्यास है। जिसमें भारत विभाजन के

---

1 'आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास' : डॉ. बेचन, पृष्ठ – 265

2 'आजकल' : सम्पादक– प्रवीण उपाध्याय, अंक–8, दिसम्बर–2005, पृष्ठ – 24

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

परिणामस्वरूप देश में होने वाले भीषण साम्प्रदायिक दंगों का वर्णन किया है। 'बसन्ती' उपन्यास में निम्न वर्ग की शोषित और उपेक्षित बसन्ती के व्यक्तित्व को उजागर किया है। संघर्ष करते–करते वह इतनी साहसी हो गई है कि वह सामाजिक मान्यताओं को नकार कर स्वतंत्र जीवन ही नहीं जीती है बल्कि परंपरागत ढांचे को तोड़ने के लिए संघर्ष भी करती है।

मन्नू भण्डारी : स्वातंत्र्योत्तर युग में महिला उपन्यास लेखिकाओं में मन्नू भण्डारी का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रमुख उपन्यास 'आपका बन्टी' और 'महाभोज' हैं। 'आपका बन्टी' माता–पिता से अलग रहने वाले बन्टी के अन्दर उत्पन्न असुरक्षा व आक्रोश को उद्घाटित करता है। "आधुनिक जीवन–स्थितियों के दुर्वार वेग में वियुक्त हुए पति–पत्नी की यातना से परे उनके सम्मिलित जीवन की देन सन्तान किस प्रकार परित्यक्ता माता या पिता के साथ रहती हुई असुरक्षा और असामान्यता की यंत्रणा की शिकार हो जाती है, यही मन्नू भण्डारी के इस उपन्यास का कथ्य है।"[1] 'महाभोज' अकेलापन और यातना की कथा है, जिसमें आधुनिक राजनीति की विभिन्न विसंगतियों को उजागर किया है।

अन्य उपन्यासकार : स्वातंत्र्योत्तर युगीन अन्य उपन्यासकारों में मोहन राकेश कृत 'अँधेरे बन्द कमरे', 'न आने वाला कल', अमरकान्त कृत 'चाँदनी के बन्धन', अमृतलाल नागर कृत 'महाकाल', 'सेठ बाँकेमल', 'बूँद और समुद्र', 'शतरंज के मोहरे', 'सुहाग के नुपूर' तथा 'ये कोठेवालियाँ', नरेश मेहता कृत 'डूबते मस्तूल', 'धूमकेतु : एक श्रुति', 'दो एकान्त', विनोद कुमार कृत 'नौकर की कमीज', हिमांशु श्रीवास्तव कृत 'लोहे के पंख', बदरीनारायण सिनहा कृत 'मैना के उलझ गये डैना', सच्चिदानन्द सिंह धूमकेतु कृत 'झोपड़ी और महल', 'माटी की महक', गिरिराज किशोर कृत 'गिरमिटिया', 'यात्राएं', प्रभाकर माचवे कृत 'तीस–चालीस–पचास', 'दर्द की पैबन्द', 'किसलिए', 'छूत', रमेश शाह कृत 'गोबर गणेश', 'किस्सा गुलाम', 'विभुति बाबू आप कहीं नहीं रहते', नरेन्द्र कोहली कृत

---

[1] 'हिन्दी उपन्यास में प्रतीकात्मक शिल्प' : डॉ. सुशीला शर्मा, पृष्ठ – 391

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

'युद्ध' (दो भाग), 'जंगल की कहानी', 'अवसर', 'राजी सेठ', 'ततसत', विष्णु प्रभाकर कृत 'रवीन्द्र कालिया', 'स्वप्नमयी', 'खुदा सही सलामत है', 'पंकज बिष्ट कृत 'लेकिन दरवाजा', पानू खोलिया कृत 'बिम्ब', भीमसेन त्यागी कृत 'जमीन', 'मथिलेश्वर सुरंग में सुबह', विवेकी राय कृत 'सोना माटी', मुद्राराक्षस कृत 'हम सब मंसाराम', राकेश कुमार सिंह कृत 'पठार पर कुहरा', अमरकांत कृत 'काले उजले दिन', 'आकाश पक्षी', दूधनाथ सिंह कृत 'आखिरी कलाम', गोविन्द मिश्र कृत 'फूल बंदा और इमारतें', शिवमूर्ति कृत ' तिरिया चरित्तर', प्रकाश मनु कृत 'सर्कस', श्रीलाल शुक्ल कृत 'विसरामपुर का संत', 'राग–विराग', विभूतिनारायण रूप कृत 'तबादला', राकेश वत्स कृत 'फिर लौटते हुए', विनोद कुमार शुक्ल कृत 'दीवार में एक खिड़की रहती थी', काशीनाथ सिंह कृत 'अपना मोर्चा' व 'काशी का अस्सी' आदि प्रमुख हैं।

इस युग में महिला उपन्यास लेखिकाओं ने भी उपन्यास लेखन में अपनी अभूतपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया है। मृणाल पाण्डे कृत 'पण्ढरपुर पुराण', 'बदी उज्जमा', कृष्णासोबती कृत 'सूरजमुखी अँधेरे के', 'समय सरगम', शिवानी कृत 'विषकन्या', कुसुम अंसल कृत 'तापसी', दिनेश नंदिनी कृत 'डालमियां का व्यूहबद्ध', 'जहामोहरा', मृदुलागर्ग कृत 'कह गुलाब', चित्रा मुद्गल कृत 'आवां गिलिगड्डु', ममता कालिया कृत 'दौड़', अलका सरावगी कृत 'कलिकथा', 'गया बायपास', 'शेष कादम्बरी', 'कोई नई बात नहीं', मधु कांकरियाँ कृत 'सलाम आखिरी', मैत्रयी पुष्पा कृत 'चाक', 'कस्तूरी कुंडल बसे', 'बेतवा बहती रही', चन्द्रकांता कृत 'ऐलान' 'गली जिन्दा है', 'यहाँ वितस्ता बहती है', 'अपने–अपने कोणार्क', 'नासिरा शर्मा कृत 'अक्षय वट', सिम्मी हर्षिता कृत रंगशाला', गीतांजलि श्री कृत 'तिरोहित', पदमा सचदेवा कृत 'जम्मू जो कभी शहर था' आदि प्रमुख उपन्यास हैं।

वर्ष 2005 में प्रकाशित होने वाले उपन्यासों में शरद सिंह कृत 'पिछले पन्ने की औरतें', रंगनाथ तिवारी का ऐतिहासिक उपन्यास 'सरधाना की बेगम',

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

सुभाष पंत का 'पहाड़ चोर', विद्यासागर नौटियाल कृत 'झुंड से बिछुड़ा हुआ', मधु कांकरिया कृत 'पत्ताखोर', सुरभि नारंग कृत 'रंग महोत्सव', कांतिदेवी कृत 'महिमामयी', मंगलसिंह मुंडा कृत 'छैला संदू', सुषमा मोहन कृत 'जिन्दगी ई–मेल', नासिरा शर्मा कृत 'कुइयांजान', राकेश कुमार सिंह कृत 'जो इतिहास में नहीं है', महुवामाझी कृत 'मैं बोरिशाइल्ला' आदि प्रमुख हैं।

इधर 2006 में विभिन्न घटनाओं पर आधारित अनेक उपन्यास प्रकाशित हुए हैं, जिनमें नवीन जोशी का चिपको आन्दोलन पर आधारित उपन्यास ' 'दावानल', मोहम्मद आरिफ का 4 दिसम्बर 1992 की यात्राओं के बीच की घटनाओं को चित्रित करता 'उपयात्रा', बंगाल के प्रसिद्ध भवाल संन्यासी केस पर आधारित मनोहर श्याम जोशी का मरणोपरान्त प्रकाशित 'कौन हूँ मैं', राजू शर्मा का समकालीन राजनीति को केन्द्र में रखकर किसानों के माध्यम से गाँव के बदलते यथार्थ व शासनतंत्र की निदर्यता, क्रूरता और फरेब को चित्रित करता 'हलफनामा', राजनीतिक भ्रष्टाचार, अवसरवादिता तथा मूल्य हीनता के चरम को उद्घाटित करता 'इन्फोकार्म का करिश्मा', शमोएल अहमद का 'महामारी', गीतांजलि श्री कृत 'खाली जगह', कामतानाथ कृत 'पिघलेगी बर्फ', ज्ञानप्रकाश विवके कृत 'दिल्ली दरवाजा', संतोष चौबे कृत 'क्या पता', 'कामरेड मोहन', नीरजा माधव कृत 'गेशे जम्पा', रामनाथ शिवेन्द्र कृत 'हरियल की लकड़ी', प्रमोद कुमार कृत 'अरे : चांडाल', विद्यासागर नौटियाल कृत 'यमुना के बागी बेटे', हरिसुमन बिष्ट का 'आछरी–माछरी', बिन्दु भट्ट कृत 'मीरा याज्ञिक की डायरी', वीरेन्द्र सारंग कृत 'बज्रांगी', मीरा सीकरी कृत 'अनुपस्थित', चन्द्रकांता कृत 'कथा सतीसर', ग्राम्य समाज पर आधारित कर्मेन्दु शिशिर का 'बहुत लम्बी राह', रूपसिंह चन्देल कृत 'नटसार', राधाबल्लभ त्रिपाठी कृत 'विक्रमादित्य कथा', प्रणव कुमार बंधोपाध्याय कृत 'अरण्य कांड', मित्तरसैनमीत कृत 'कौरवसभा', गोविन्द मिश्र कृत 'कोहरे में कैद रंग', देवकीनन्दन शुक्ल कृत 'पंथ और परिणति', मैत्रयी पुष्पा कृत 'त्रिया हठ', राजेन्द्र यादव कृत 'एक था शैलेन्द्र' आदि प्रमुख हैं।

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/

स्वातंत्र्योत्तर युगीन उपन्यासों में स्वतंत्रता से पूर्व व बाद की विभिन्न सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक घटनाओं एवं परिस्थितियों का व्यापक प्रभाव पड़ा। विभिन्न साम्प्रदायिक दंगे, विभाजन की विभीषिका एवं स्वतंत्रता के बाद की विभिन्न समस्याओं महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पारिवारिक विघटन आदि अनेक घटनाओं ने उपन्यास साहित्य को प्रभावित किया है। फलस्वरूप उपन्यास का विषय क्षेत्र इन सबको अपने अन्दर समेटने में सफल रहा। ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सभी प्रकार के उपन्यासों की रचना होने लगी। उपन्यासों में यथार्थता का प्रभाव बढ़ने लगा उपन्यास रचना में नित नवीन प्रयोग होने लगे हैं। पाश्चात्य प्रभाव भी उपन्यासों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगा। पिछले बीस वर्षों से एक से एक उत्कृष्ट रचनाएँ नवीन प्रयोगों के साथ हमारे सामने आयी हैं। शिल्पविधि के अभिनव प्रयोग से उपन्यास साहित्य निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है।

❖❖❖❖

Estelar

Created with Print2PDF. To remove this line, buy a license at: http://www.software602.com/